ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

आषाढ़-सावन संवत् नानकशाही ५५६ जुलाई 2024 वर्ष १७ अंक ११

गुरुद्वारा श्री बंगला साहिब, नई दिल्ली

भाई मनी सिंघ जी का बंद-बंद काट कर
शहीद किये जाने का दृश्य

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

आषाढ़-सावन संवत् नानकशाही 556
वर्ष 17 अंक 11 जुलाई 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
. . . मीरी और पीरी का सिद्धांत 7
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
श्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ॥ 13
- डॉ. गुरविंदर कौर
बहादुर सिक्ख स्त्री : माता भाग कौर 17
-डॉ. मनजीत कौर
शहीद भाई मनी सिंघ जी 22
- ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल (दिवंगत)
शहीद भाई तारू सिंघ जी 26
- डॉ. गुरमीत सिंघ
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णित न्याय-व्यवस्था :
'हलेमी राज' की अवधारणा 32
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
सरदार ऊधम सिंघ शहीद 36
-डॉ. कशमीर सिंघ नूर
सरदार तेजा सिंघ समुंदरी : वैयक्तिक और पंथक जीवन 40
- डॉ. हरप्रीत कौर
खबरनामा 47

गुरबाणी विचार

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥
बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥
हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥
जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥
सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६ ॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में सावन मास की सुहावनी ऋतु और इससे संबंधित प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृश्य-चित्रण तथा बिंबावली के प्रसंग में आत्मा की प्रभु-मिलाप की इच्छा के साथ-साथ गुरमति मार्ग के अनुरूप इसके लिए दिशा-निर्देश बख्शिश करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि जैसे सावन मास में वनस्पति रस से भरपूर हो जाती है वैसे ही रूहानी मार्ग पर चलने वाली जीव-स्त्री के लिए प्रभु-भक्ति के मार्ग में भी ऐसा ही पड़ाव आता है जब उसका प्रभु के कमल रूपी सुंदर चरणों के साथ प्यार बन जाता है अथवा उसे प्रभु-चिंतन-मनन में रस आने लगता है। उसका मन सदैव मालिक के रंग में रंग जाता है और वह प्रभु-नाम को अपने जीवन का आधार बना लेती है। उसे सांसारिक विषय-विकारों के रंग में झूठ अथवा उनके अस्थायी होने का आभास हो जाता है और ये उसे राख रूपी प्रतीत होते हैं। उसको प्रभु-नाम रूपी अमृत बूंद के सुहावनी होने का अनुभव होता है और उसे साधु-जनों की संगत में ही पीया जा सकता है, ऐसा तथ्य ज्ञात हो जाता है।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस प्रभु के संग से सारी वनस्पति ने प्रफुल्लित होना है, उस प्रभु का अंत मनुष्य-मात्र नहीं पा सकता। ऐसे सक्षम प्रभु से मिलने के लिए मेरा मन अभिलाषी है, परंतु वह मात्र चाहने से नहीं बल्कि उसी की कृपा से मिलता है। जीव-आत्मा महसूस करती है कि उसने अभी मालिक को पाया नहीं, परंतु जिन भाग्यशाली जीव-स्त्रियों ने उस मालिक को प्राप्त कर लिया है उन पर मैं सदैव बलिहार जाती हूं। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मुझ असहाय पर भी कृपा करो। गुरु-शबद द्वारा आप मेरी तकदीर संवारने वाले हो। सावन का महीना उन भाग्यशाली जीव-स्त्रियों के लिए ही शीतल व सुहावना है जिन्होंने अपने हृदय रूपी गले में प्रभु-नाम रूपी माला पहन ली है।

संपादकीय

आओ! भाई तारू सिंघ जी के जीवन से शिक्षा लेकर केशों का सम्मान करना सीखें!

सिक्ख धर्म का आगाज़ ही ज़ालिम के जुल्म का डटकर मुकाबला करने की प्रेरणा से हुआ है, इसके लिए चाहे जान भी क्यों न देनी पड़े। देश की दबी-कुचली जनता हुक्मरानों के जुल्म को सहन करती हुई बद से बदतर जिंदगी व्यतीत कर रही थी। जुल्म के विरोध में सिक्ख गुरु साहिबान और सिक्ख शूरवीरों ने अनेक कुर्बानियां दीं। इनमें से एक हैं-- भाई तारू सिंघ जी, जिन्होंने अपनी खोपड़ी उतरवाकर शहीदी प्राप्त की । इनके बारे में प्रसिद्ध बंगाली कवि श्री रवींद्र नाथ टैगोर की कलम भी अपने भावपूर्ण शब्द लिखने से नहीं रह पाई। टैगोर लिखते हैं कि जब भाई तारू सिंघ जी ने जुल्म के आगे घुटने टेकने से इनकार कर सिक्खी को केशों-श्वासों के संग निभाने का प्रण दुहराया तो हुक्मरान बादशाह ने भाई साहिब से कहा कि आप मुझे एक तोहफा दे दो। भाई साहिब बादशाह की दुष्टता को समझ गए कि बादशाह उनसे उनके गुरु की मोहर केश मांगकर एक तीर से कई शिकार करना चाहता है और उनकी सिक्खी पर प्रहार करना चाहता है। परंतु धन्य थे गुरु के सिक्ख भाई तारू सिंघ जी, जिन्होंने बादशाह की मांग का उत्तर देते हुए कहा कि ''हे बादशाह ! तुमने मेरे केशों की मांग की है, तो ले लो, परंतु इनको काटना मत, खोपड़ी समेत उतार लो !''

इसी क्रम में भाई तारू सिंघ जी को उनकी खोपड़ी उतारकर शहीद कर दिया, क्योंकि एक तरफ मानवता के पुरोधा सिक्ख शूरवीर थे तो दूसरी तरफ हुकूमत के ज़ालिम हुक्मरान थे।

जकरिया ख़ान लाहौर का गवर्नर था, जिसने प्रण किया हुआ था कि वो मानवता के गुणों से ओत-प्रोत सिक्खों का नामो-निशान इस दुनिया से मिटा देगा। वो जितने सिक्खों को शहीद करता, उससे कहीं ज्यादा उसके विरोध में आवाज़ उठाने को तैयार हो जाते। जकरिया ख़ान ने मुखबिरों के जरिए सिक्खों को दुनिया के नक्शे से मिटा देने का अभिमान चला रखा था। उसके इस पाप में हिस्सेदार थे हरिभगत निरंजनीया जैसे अनेक सरकारी मुखबिर। सिक्खों के विरुद्ध शिकायतें करने का मौका ये कपटी लोग अपने हाथ से नहीं जाने देते थे।

भाई तारू सिंघ जी गांव पूहला, जिला तरनतारन के निवासी थे। भाई साहिब थोड़ी-सी ज़मीन पर किसानी करके अच्छा जीवन-निर्वाह किए जा रहे थे। जकरिया ख़ान के आतंक के कारण सिक्खों को एक जगह टिकना या घर पर बैठना नसीब नहीं था। वे जंगलों आदि में दिन-रात

बिताकर मुगलिया हुकूमत की ज़ालिम नीतियों का डटकर विरोध करते तथा अपने साथियों को हुकूमत से लोहा लेने की प्रेरणा देते। ऐसे सिक्खों की सेवा में भाई तारू सिंघ जी का परिवार सदैव तत्पर रहता। भाई जी ऐसे सिक्खों की लंगर आदि से भरपूर सेवा करते, क्योंकि भाई जी में धर्मी मनुष्य वाले वे सारे गुण विद्यमान थे, जो उन्हें धर्म-पथ पर चलने वाले लोगों का समर्थन करने को उत्साहित करते थे।

मानव-गुणों से रहित तथा अवगुणों की खान बन चुके हरिभगत निरंजनीया को जैसे ही ख़बर हुई कि भाई तारू सिंघ जी गुरु के सिक्खों की लंगर आदि द्वारा मदद कर रहे हैं तो उसने झट से जाकर जकरिया ख़ान के कान भर दिए। जकरिया ख़ान भड़क उठा और उसने अपने दुष्ट होने की पहचान दर्शाते हुए भाई तारू सिंघ जी को गिरफ्तार कर लाने के लिए सिपाहियों को रवाना कर दिया। भाई जी को गिरफ्तार कर जकरिया ख़ान के सामने पेश किया गया।

जकरिया ख़ान की आंखों में क्रोध की ज्वाला भड़क रही थी जबकि भाई जी की आंखों में सब्र, संतोष, धैर्य, शांति की रोशनी जगमगा रही थी। अन्य मुगल तानाशाहों की भांति जकरिया ख़ान के पास भी एक ही रास्ता था कि हुकूमत की नीतियों के विरोध में चलने वालों को जलील करने एवं अन्य बागी सुर वालों को आगाह करने के लिए पकड़े गए सिक्ख का ईमान खरीद लिया जाए या उसका धर्म-परिवर्तन करवा दिया जाए। भाई जी ने जकरिया ख़ान के सारे भय-लालच ठुकरा दिए। जकरिया ख़ान ने अपना असली अत्याचारी मनुष्य का रूप दिखाते हुए हुक्म दिया कि भाई जी के केश कत्ल (काट) कर दिए जाएं। भाई जी में इंसानियत एवं सिक्खी-प्रेम उफान पर था। उन्होंने कहा कि मैं किसी भी हाल में अपने केशों को कत्ल नहीं होने दूंगा। जकरिया ख़ान ने वहशियाना हंसी हंसते हुए कहा, ''तो फिर इसकी खोपड़ी ही उतार दी जाए!'' धैर्यवान भाई तारू सिंघ जी मन ही मन प्रभु-नाम में लीन, साहस में बंधे भगवान के सच्चे मनुष्य की मूरत बनकर बैठे रहे। जल्लाद ने बड़ी निर्दयता से भाई जी की खोपड़ी उतार दी। मानवता कांप उठी। हर तरफ आतंक का सन्नाटा छा गया। कई दिन की यातनाएं सहते हुए भाई जी शहीद हो गए। भाई तारू सिंघ जी ने अपने जीवन में बड़े धैर्य से शुभ कर्मों का संग्रह किया तथा अंत समय में हुकूमती ज्यादतियों को सहन कर यह बता दिया कि दुनिया में ज्यादतियां करने वाले ज़ालिमों को इतिहास हमेशा दुत्कारता रहेगा, जबकि धर्म और सत्य के पक्ष में डटकर, लड़कर वीरगति को पाने वाले लोग रहती दुनिया तक सम्मान के पात्र बने रहेंगे।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की अनमोल देन : मीरी और पीरी का सिद्धांत

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अत्यंत विषम परिस्थितियों के मध्य गुरुआई पर आसीन हुए थे। पिता श्री गुरु अरजन साहिब की लाहौर में हुई शहीदी ने श्री गुरु नानक साहिब के स्थापित किये सिक्ख पंथ को एक निर्णायक मोड़ पर ला खड़ा कर दिया था, जहां से भविष्य की दिशा तय होनी थी। प्रश्न था कि तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों में सिक्ख कैसे अपने सिद्धांतों और विश्वास को अक्षुण रखते हुए श्री गुरु नानक साहिब के बताये मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं। श्री गुरु अरजन साहिब की शहीदी का उद्देश्य ही सिक्खों को विचलित कर उनके धर्म से च्युत कर देना था। मुगलों को आशा थी कि अपने गुरु की शहीदी से सिक्खों में निराशा और निष्क्रियता उत्पन्न होगी और वे भयवश अपने गुरु से दूर हो जायेंगे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को सिक्खों के धार्मिक विश्वास की रक्षा भी करनी थी और उन्हें अन्याय का प्रतिरोध करने की शक्ति भी प्रदान करनी थी। उन्होंने श्री गुरु अरजन साहिब की शहीदी को धर्म की विजय के रूप में देखा। अपने विश्वास एवं विचार पर कैसे अटल रहा जा सकता है और कैसे अपने प्राणों का उत्सर्ग कर अपने सिद्धांतों की सर्वोच्चता स्थापित की जा सकती है, यह श्री गुरु अरजन साहिब अपनी शहीदी के माध्यम से सिखा गये थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब इस शिक्षा को कार्यरूप देने के लिये ही दो कृपाणें धारण कर गुरुआई पर आसीन हुए थे। इनमें से एक कृपाण मीरी अर्थात् राज-शक्ति और दूसरी पीरी अर्थात् धर्म-शक्ति की प्रतीक थी। धर्म-शक्ति और राज-शक्ति के समन्वय से ही समाज की मर्यादा बनती है और मानव-हित सुरक्षित रहते हैं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब में इन दोनों शक्तियों का सुमेल प्रकट हुआ, जिसके दर्शन गुरु साहिब के दरबार के विद्वान भाई गुरदास जी ने स्वयं किये और वर्णन किया :

दलि भंजन गुरु सूरमा
वड जोधा बहु परउपकारी। *(वार १ : ४८)*

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का पूरा जीवन मीरी और पीरी के समन्वय का प्रतीक था। उन्होंने अंतर के विकारों और अवगुणों को एक योद्धा की भावना से नाश करना सिखाया। गुरसिक्ख में यदि योद्धा-वृत्ति होगी तो वह अपने विकारों का नाश कर पायेगा, अपने सिद्धांतों, मूल्यों को सुरक्षित रख पायेगा, अपने धर्म पर आक्रमण करने वाले वैरी को भी परास्त कर पायेगा। वीरता को गुरु साहिब ने एक अवस्था की तरह देखा, जो अंततः मानवता के कल्याण के काम आती है। इसके लिये त्याग और

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

कुर्बानी एक योद्धा ही कर सकता है। श्री गुरु नानक साहिब ने स्पष्ट कर दिया था कि उनका मार्ग ही साहसिक त्याग का मार्ग है-- ''जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥'' श्री गुरु नानक साहिब का पंथ मन और आचरण दोनों की शुद्धता का पंथ था। इस पर चलने का अर्थ था-- समाज की छुरी जैसी तीखी हो गई विखंडन वाली सोच और व्यवस्था का सामना करना। इस मार्ग पर समाज के असरदार, ताकतवर और निर्दयी लोगों के अत्याचारों से भी मुकाबला था। श्री गुरु नानक साहिब के बताये पंथ पर चलते हुए धर्म के सच्चे स्वरूप को भी संसार के सामने लाना था जो अन्याय और अत्याचार के घोर अन्धकार में खो गया था। यह सबसे कठिन कार्य था, जिसे पूरा करने का संकल्प गुरु साहिबान ने धारण किया था। श्री गुरु नानक साहिब को बाबर की कैद में रह कर, श्री गुरु अंगद साहिब को हुमायूं के सामने अडोल रह कर और श्री गुरु अमरदास जी को 'पहले पंगत, पाछे संगत' के नियम का अकबर से पालन करवा कर समय की विखंडन वाली तीखी धार को कुंद करना पड़ा था। इससे शक्तिशाली की अत्याचारी मनोवृत्ति को करारी चोट पहुंची और आम लोगों में नई आशा पैदा होने लगी। श्री गुरु रामदास साहिब और श्री गुरु अरजन साहिब ने अमृत सरोवर, अमृतसर (शहर) और श्री हरिमंदर साहिब रच कर धर्म के स्वरूप को अधर्म तथा अनाचार की अमावस्या से उभारने का महान उपकार किया। श्री गुरु अरजन साहिब ने लाहौर में शहीदी देकर धर्म को जगमग नूर बना दिया। धर्म की बढ़ती ताकत अधर्म और अन्याय की शक्तियों को कभी सहन नहीं होती। वे स्वयं को अधिक क्रूर और कठोर बनाती जाती हैं। उनका सबसे बड़ा भय किसी की जान ले लेना होता है। श्री गुरु नानक साहिब अन्याय के इस मनोविज्ञान को भली-भांति जानते थे, इसीलिये उन्होंने ऐसे लोगों का आह्वान किया था जो समय आने पर अपने प्राण भी देने से पीछे न हटें-- *''सिरु दीजै काणि न कीजै।।''* जब मृत्यु का भय नहीं रहता तब अत्याचारी, अन्यायी का भय भी मिट जाता है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का मीरी और पीरी का सिद्धांत इस भय के मिट जाने की घोषणा थी। लोगों के मन में से सदियों से बैठे हुए इस भय को तोड़ने की गुरु साहिबान की युक्ति बेमिसाल थी। यह युक्ति थी-- उन्हें परमात्मा के साथ जोड़ कर उसके भय में ले आना। परमात्मा के भय का अर्थ था-- उसकी सत्ता, सर्वोच्चता, महानता और गुणों को जान कर उन पर विश्वास करना, जिसे संसार की दृष्टि में धर्म, पीरी और पूजा माना जाता था। श्री गुरु नानक साहिब से पहले भी धर्म था। गुरु साहिब ने इसे विश्वास में बदला था। उन्होंने कहा कि परमात्मा की कृपा से ही मनुष्य धर्म के मार्ग पर चल कर जीवन जीता है। मनुष्य के लिये परमात्मा ही सब कुछ है।

जब मनुष्य संसार की सर्वश्रेष्ठ और अपार शक्ति परमात्मा का संग कर लेता है, उसके हुक्म और मति के अनुसार चलना आरंभ कर देता है तो सारे विकारों, माया-मोह, संसार के किसी भी भय से, यहां तक कि अपनी मृत्यु के भय से भी मुक्त हो जाता है-- *''सो जनु मुकतु जिसु एक लिव लागी*

सदा रहै हरि नाले।।'' उसके लिये जन्म और मृत्यु का भेद मिट जाता है :

जीवण मरणु को समसरि वेखै।।
बहुड़ि न मरै ना जमु पेखै।। *(पन्ना ७९८)*

धर्म सम्पूर्ण शक्ति है, जो मनुष्य को सभी दुखों से उभार कर उसका उद्धार कर सकती है। धर्म के अनेक प्रतीक इसके पूर्व तक प्रचलित थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पहले धर्म-पुरुष थे जिन्होंने कृपाण को पीरी अथवा धर्म का प्रतीक बना कर इसलिये प्रकट किया, क्योंकि कृपाण मनुष्य के बल का अंतिम विकल्प थी। उनके द्वारा धर्म के प्रतीक रूप में कृपाण धारण करना धर्म जगत की अद्‌भुत घटना थी। इससे पूर्व चोला, माला, दंड, जनेऊ, कमंडल आदि धर्म के चिन्ह माने जाते थे। कृपाण राजाओं और योद्धाओं का हथियार थी। कृपाण धारण करने पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से कई प्रश्न भी किये गये और शंकायें भी व्यक्त की गईं कि वे श्री गुरु नानक साहिब के पंथ से दूर हो गये हैं। ऐसे संदेह उनमें ही पैदा हो रहे थे जिन्होंने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पूर्व के गुरु साहिबान द्वारा दिखाए गये धर्म के स्वरूप को निकट से समझा व जाना नहीं था। गुरु साहिबान ने मात्र परमात्मा की बात की थी। परमात्मा के गुण, उसकी महानता और बल ही गुरु साहिबान की दृष्टि में धर्म था और मनुष्य का उस निरंकार परमात्मा से मन का सम्बन्ध स्थापित करना ही धार्मिक कर्म था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की शक्ति वास्तव में उनके आध्यात्मिक गुण थे :

हरखहु सोगहु बाहरा हरण भरण समरथु सरंदा।
रस कस रूप न रेखि विचि राग रंग निरलेपु रहंदा।
गोसटि गिआन अगोचरा
बुधि बल बचन बिबेक न छंदा।
गुर गोविंदु गोविंदु गुरु हरिगोविंदु सदा विगसंदा।
अचरज नो अचरज मिलै
विसमादै विसमाद मिलंदा।
गुरमुखि मारगि चलणा खंडेधार कार निबहंदा।

(भाई गुरदास जी, वार २४ : २१)

मीरी और पीरी का समन्वित बल ऐसी अपूर्व अवस्था का सृजन करता है जिसे देख आश्चर्य भी आश्चर्यचकित हो जाये। एक अपार विस्मय प्रकट होता है। यह अवस्था हर्ष और शोक से परे की अवस्था है जो मानवता का हित करने में पूर्ण समर्थ है। ऐसा करने का सामर्थ्य संसार की माया, मोह से निर्लिप्त होकर ही प्राप्त होता है। यह परम शक्ति खंडे की तीखी धार पर भी सहजता से चलने जैसी है, जिसे संसार का कोई भी ज्ञान, कोई भी बल, कोई भी युक्ति अथवा कथन पराजित नहीं कर सकता। मीरी और पीरी के सिद्धान्त ने ही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को अजेय बनाया था। तत्कालीन परिस्थितियां धर्म के मार्ग को पूर्णरूपेण अवरुद्ध करने वाली थीं। लोग धर्म के सच्चे मार्ग पर चल सकें, इसे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मीरी और पीरी के सिद्धान्त के माध्यम से सुनिश्चित किया। राजसी शक्ति की प्रतीक कृपाण धर्म-मार्ग की बाधाओं को दूर करने के लिये थी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सामने भी प्रश्न खड़े हुए कि उन्होंने दो कृपाणें मीरी और पीरी की क्यों धारण की हैं। गुरु साहिब ने कशमीर में शिवाजी के गुरु श्री

समर्थ रामदास से कहा था-- *''बातन फकीरी, जाहर अमीरी, शस्त्र गरीब की रक्खिआ, जरवाणे की भक्खिआ।''* उन्होंने कहा कि उनकी विचारधारा श्री गुरु नानक साहिब की शिक्षाओं के अनुरूप ही है, भले ही उन्होंने राजा जैसा वेश धारण किया हुआ है। यह वेश धर्म की श्रेष्ठता को प्रकट करने के लिये है, क्योंकि संसार में ईश्वर और धर्म की ही सत्ता चल रही है। गुरु साहिब ने कहा कि उनके शस्त्र कोई राजपाट स्थापित करने के लिये नहीं, निर्बल और सताए लोगों की रक्षा तथा अन्यायी का नाश करने के लिये हैं। इसके बिना धर्म की भूमिका सम्पूर्ण नहीं होती। कहते हैं कि गुरु साहिब की ये स्पष्ट और निर्भीक बातें सुन कर श्री समर्थ रामदास, जो एक प्रतिष्ठित संत थे, ने गुरु जी को गले से लगा लिया था। धर्म सदैव से मनुष्य के सभी दुखों का निदान करता आया है। यह भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में, भिन्न-भिन्न रूपों में हुआ है। परमात्मा ने खंभे से भी प्रकट हो धर्म और विश्वास की रक्षा की है। सच्चा धर्मपुरुष परमात्मा के प्रतिनिधि के रूप में धर्म की रक्षा के लिये कोई भी उपाय करता है। वह बल-प्रयोग भी करता है तो उतना ही, जिससे मार्ग प्रशस्त हो सके। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने भी यही किया था। जब श्री गुरु नानक साहिब के चरण-स्पर्श स्थान श्री नानकमता साहिब (उत्तराखंड) पर योगियों ने जबरन कब्जा कर लिया तो श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सिक्ख सैनिकों को लेकर श्री अमृतसर साहिब से वहां आये। उनकी शक्ति देख कर ही योगियों का दल भयभीत हो गया और वहां से भाग गया। गुरु साहिब ने बिना शक्ति-प्रयोग ही कार्य सिद्ध किया और वहां प्रचार-केंद्र स्थापित कर उसे सिक्ख पंथ के एक मजबूत केंद्र के रूप में विकसित किया। इस क्षेत्र का राजा बाज बहादर गुरु जी के उपदेश सुन कर सिक्ख बन गया था। यदि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मीरी की कृपाण न धारण की होती तो योगियों का दल भयभीत होकर पीछे न हटता। यदि गुरु साहिब ने पीरी की कृपाण न पहनी होती तो बाज बहादुर सिक्ख न बनता। गुरु साहिब ने शक्ति का प्रयोग धर्मानुसार किया और उसके अंतिम परिणाम के रूप में धर्म की प्रतिष्ठा स्थापित हुई।

संसार में आज अशांति इसलिये है, क्योंकि शक्ति का मनमाना प्रयोग किया जा रहा है। धर्म के नाम पर जो भी किया जा रहा है उससे धर्म की स्थापना के स्थान पर घृणा, हिंसा और भेदभाव ही बढ़ रहे हैं। यह जानना चाहिये कि शक्ति का कहां और कैसा प्रयोग करना है। ऐसा तभी संभव है जब मन में परमात्मा का बल और ध्यान हो, जो दृष्टि को निडर ही नहीं, निर्विकार और निरवैर बना देता है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने संसार को समझाने के लिये इसके प्रत्यक्ष प्रमाण दिये। जिस जहांगीर के आदेश पर गुरु साहिब के पिता श्री गुरु अरजन साहिब को असह यातनायें देकर शहीद किया गया उसी जहांगीर की जान बचाने के लिये श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपनी कृपाण के एक वार से शेर के दो टुकड़े कर दिये थे। जहांगीर कृतघ्न था। अपनी जान बचाये जाने के बावजूद उसने गुरु साहिब को कैद कर लिया और ग्वालियर के किले

में बंदी बना कर रखा। गुरु साहिब ने निजी स्वतन्त्रता के लिये सैनिक-शक्ति का प्रयोग नहीं किया और इस कैद को स्वयं स्वीकार किया, किन्तु जब वीरता दिखाने के अवसर आये तो वे तनिक भी नहीं चूके। जहांगीर को जब गुरु साहिब की महानता का बोध हुआ तो उसने उन्हें और उनके कहने पर बावन बंदी राजाओं को, जो उसी किले में वर्षों से कैद थे, एक साथ ही रिहा कर दिया।

जहांगीर के बाद जब शाहजहां गद्दी पर बैठा तो परिस्थितियां बदल गईं। गुरु साहिब को मुगलों से चार युद्ध लड़ने पड़े और चारों युद्धों में उनकी विजय हुई थी। गुरु साहिब ने इन युद्धों में स्वयं पहल नहीं की। गुरु साहिब ने ऐसी वीरता दिखाई कि कोई भी युद्ध तीन-चार दिन से अधिक नहीं चला। उनका सख़्त हुक्म था कि डट कर लड़ना है किन्तु शस्त्रहीन अथवा भाग रहे शत्रु की पीठ पर वार नहीं करना है। उन्होंने सेना भी सीमित रखी थी।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब मानव जीवन का मूल्य जानते थे। गुरु साहिब ने शस्त्र धारण किये, सेना गठित की, सिक्खों में वीरता का भाव उत्पन्न किया, किन्तु उन्हें शक्ति को धर्म से मर्यादित करना भी सिखाया। गुरु साहिब युद्धों के दुष्परिणामों के बारे में जानते थे। युद्ध उनके लिये अंतिम विकल्प की तरह थे, जैसा कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'जफ़रनामा' में लिखा है। उनका बल और सेना मात्र व्यावहारिक और अपरिहार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये थी। वे जानते थे कि संख्या-बल से अधिक महत्वपूर्ण परमात्मा व धर्म पर विश्वास है। आत्मिक दृढ़ता से बाह्य बल कई गुणा बढ़ जाता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का चिड़ियों से बाज को तुड़वाने और सवा लाख वैरी से एक सिक्ख को लड़वाने का संकल्प इसी विचार पर टिका हुआ था।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को अपने पिता श्री गुरु अरजन साहिब से धर्म के संकल्पों की शिक्षा और प्रेरणा प्राप्त हुई थी। श्री गुरु अरजन साहिब ने सिक्ख पंथ को बहुत कुछ दिया। श्री गुरु अरजन साहिब ने श्री दरबार साहिब की रचना कराई, श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सर्वाधिक बाणी श्री गुरु अरजन साहिब की है। वे सिक्ख पंथ में शहीदी परंपरा के जनक भी थे। स्पष्ट रूप से श्री गुरु अरजन साहिब का प्रभाव श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पर पड़ा। यही कारण था कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सेना तैयार की, शस्त्र धारण किये, युद्ध भी किये, किन्तु उनके जीवन का अधिकांश समय धर्म की प्रतिष्ठा और लोगों के आत्मिक विकास में ही लगा।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्खों को अपने धर्म की रक्षा के लिये स्वयं समर्थ बनाया। इससे सिक्खों में आत्मविश्वास जाग्रत हुआ। गुरु साहिब जब ग्वालियर के किले में थे कई सिक्ख उनसे मिलने आये। सिक्ख जोश में थे और हमला कर गुरु साहिब को वहां से मुक्त करने की आज्ञा मांगी। गुरु साहिब ने इनकार कर दिया। गुरु साहिब बल होते हुए भी बल का प्रयोग नहीं करना चाहते थे, क्योंकि बल- प्रयोग उस समय अपरिहार्य नहीं था। उन्होंने कहा कि श्री अमृतसर साहिब श्री हरिमंदर साहिब की व्यवस्था सिक्ख स्वयं संभालें। इसके

लिये उन्होंने बाबा बुड्ढा जी व अन्य सिक्खों पर विश्वास कर उन्हें आवश्यक निर्देश दिये थे। सिक्ख इस पर खरे उतरे और श्री हरिमंदर साहिब की मर्यादा और सारा प्रबंध गुरु साहिब की अनुपस्थिति में भी सुचारू रूप से चलता रहा।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का प्रथम और मूल उद्देश्य सिक्खों के मन को परमात्मा के साथ जोड़ना था। उनके लिये परमात्मा में रम जाने की अवस्था मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ अवस्था थी। गुरु साहिब सदैव संगत को निर्मल और एकाग्र मन से गुरबाणी का जाप करने की प्रेरणा देते थे। एक बार धर्म पर चर्चा हो रही थी तो गुरु साहिब ने कहा कि कौन मन लगा कर पाठ कर सकता है? उस समय गुरु साहिब के दरबार में उपस्थित भाई गोपाला जी आगे आये और गुरु साहिब की अनुमति से जपु जी साहिब का पाठ आरंभ किया। वे जिस प्रेम-भाव और एकाग्रता से पाठ कर रहे थे, उसे देख सभी लोग बड़े प्रभावित हुए और गुरु साहिब भी मन ही मन उसकी सराहना करने लगे। गुरु साहिब ने सोचा कि ऐसे निर्मल भक्त को तो बड़ा उपहार मिलना चाहिये। गुरु साहिब ने गंभीरतापूर्वक सोच लिया कि वे भाई गोपाला जी को गुरुगद्दी सौंप देंगे। इधर भाई गोपाला जी का पाठ जारी था। भाई गोपाला जी उस समय जपु जी साहिब की सैंतीसवीं पउड़ी-- ''सच खंडि वसै निरंकारु'' पर पहुंच गये थे। ठीक इसी समय उनके मन में विचार आया कि ''पाठ तो वे अच्छा कर रहे हैं। यदि गुरु साहिब प्रसन्न हों तो उसे उन पांच घोड़ों में से एक घोड़ा दे दें जो धनी व्यापारी सुभागा लेकर आया है।'' अंतरयामी गुरु साहिब ने उसके विचार को जान लिया और गुरुगद्दी देने के स्थान पर घोड़ा प्रदान किया। इससे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की परमात्मा और धर्म के प्रति आस्था सहज ही ज्ञात होती है। वे धर्म और धार्मिक वृत्ति को सर्वोत्तम मानते थे और उसके लिये अपना सर्वस्व, गुरुगद्दी तक अर्पण करने को तैयार थे। उनकी दृष्टि इतनी सचेत और गहरी थी कि वे योग्य निर्णय करने में भी समर्थ थे। उन्हें जैसे ही भाई गोपाला जी की वास्तविक इच्छा का बोध हुआ, उन्होंने अपना निर्णय बदल उसे घोड़ा दे दिया।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री दरबार साहिब के ठीक सामने श्री अकाल तख्त साहिब का निर्माण करा कर मानव समाज को संदेश दिया कि राज-शक्ति सदैव धर्म-शक्ति के मुखापेक्षी रहती है। राज-शक्ति का धर्म की मर्यादा में रहना ही हितकारी है। श्री अकाल तख़्त साहिब पर समानान्तर फहराये जाने वाले दो निशान साहिब में से धर्म के प्रतीक निशान साहिब को सदैव ऊंचा रखा जाता है। तख़्त का नामकरण श्री अकाल तख्त साहिब होना भी अर्थपूर्ण है कि संसार में यदि शक्ति है तो परमात्मा की है। परमात्मा ही सर्वसमर्थ है-- ''सरणि के दाते बचन के सूरे ॥'' परमात्मा का जन भी परमात्मा की कृपा प्राप्त कर निर्भय हो जाता है-- *''जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा।।''* मीरी और पीरी का सिद्धान्त परमात्मा के रंग मे रंगे हुए वीर तैयार करना है, ताकि धर्म प्रतिष्ठित रहे।

श्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ ।।

– डॉ. गुरविंदर कौर*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'वार श्री भगउती जी' में अपने से पूर्व नौ गुरु साहिबान की प्रशंसा करते हुए श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के सम्बंध में फरमान किया है :

श्री हरिक्रिशन धिआईऐ
जिस डिठे सभि दुखि जाइ ।।

गुरसिक्ख जब अकाल पुरख के चरणों में अरदास करता है तो वह इन शब्दों का उच्चारण करता हुआ अति प्रेम, श्रद्धा और सत्कार के साथ श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को अकीदत पेश करता है। अरदास के ये बोल ऐसे हैं, जो प्रेरणा देते हैं कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को अवश्य याद करना चाहिए, क्योंकि उनके दर्शन करने से (मानसिक) दुखों से छुटकारा प्राप्त होता है। इस पंक्ति से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के माध्यम से बाला प्रीतम गुरु की मान्यता, महानता और गौरवता का पता चलता है।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने बचपन में ही अपनी अकाली बोल–वृत्ति का जो प्रकटीकरण किया, अपने आप को अहं से मुक्त, निर्भय और निर्वैर साबित किया, गुरु को स्व अर्पित कर सामाजिक एवं राजसी परिस्थिति में भी (बलबीरा का) जो प्रभाव छोड़ा उसका ही बड़ा फल यह मूर्तिमान हुआ कि श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने छोटे सुपुत्र श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी के योग्य जान कर (सवा) पाँच वर्ष की आयु में ही गुरुआई पर स्थापित कर दिया। आओ! ऐसे महान गुरु जी के जीवन और शख्सियत के बारे में विचार–चर्चा करते हैं।

प्रारंभिक जीवन : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का प्रकाश श्री गुरु हरिराय साहिब तथा माता किशन कौर जी के घर सावन वदि १०, संवत् १७१३ (७ जुलाई, १६५६ ई.) को कीरतपुर साहिब में हुआ। आप जी के दादा बाबा गुरदित्ता जी और परदादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब थे। रामराय आपका बड़ा भाई था।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को प्रभु–दरगाह से दैवी गुणों वाली आत्मिक उच्चता प्राप्त हुई और जन्म से ही गुरमति की शिक्षा–दीक्षा प्राप्त होने लगी थी। आपने छोटी आयु में ही पिता जी की संगत में रह कर सब तरह की विद्या, गुरबाणी और गुरमति सिद्धांतों की समझ तथा दूसरे धर्मों का ज्ञान ग्रहण कर लिया था। आप अंतर–बोध के धारक और ब्रह्म–ज्ञान से ओत– प्रोत थे। देखने–सुनने वाले महान विद्वान भी बाल–गुरु की दिव्य श्रेष्ठता एवं आलौकिक बुद्धि से हैरान हो जाते थे। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का हृदय कोमल तथा विशाल था। उनमें परोपकार की भावना बेमिसाल थी। वे पिता जी के आज्ञाकारी सुपुत्र थे और गुरु–पिता की नीति को अच्छी तरह से समझते थे। श्री गुरु हरिराय साहिब को अपने छोटे सुपुत्र में गुरु–ज्योति के अंश, जो उन्होंने विरासत में प्राप्त किये थे, दिखाई दे रहे थे।

गुरुआई की प्राप्ति : सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय

*गांव डाक: सूलर, जिला : पटियाला– १४७००१, फोन : ९८१४५-३८२८८

साहिब ने अपना ज्योति-जोत समाने का समय निकट आया जान कर अपने छोटे सुपुत्र को हर तरह से योग्य जाना और गुरबाणी के महावाक्य-- *''तखति बहै तखतै की लाइक''* के अनुसार, सन् १६६१ ई. में संगत के सम्मुख श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरुआई सौंप दी। श्री गुरु हरिराय साहिब ने श्री गुरु नानक देव जी की ज्योति और युक्ति का गुरु- वारिस स्थापित करते हुए यह फरमान भी किया कि जो श्री गुरु हरिक्रिशन पातशाह के दर्शन करेगा, उसके मानसिक संताप दूर हो जाएंगे, सहजावस्था एवं आनंद उसका धन बन जायेगा। आपका दर्शन-दीदार निश्चय ही ''सभि दुखि जाइ'' का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस प्रकार सवा पाँच वर्ष की आयु में ही श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब गुरु रूप में प्रकट हुए। आप जी सबसे छोटी आयु में श्री गुरु नानक देव जी के आत्मिक खजाने के मालिक बने।

यहाँ यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि श्री गुरु नानक देव जी की अनन्त ज्योति ही गुरु-रूप होकर शेष गुरु साहिबान में विचरण करती थी। ज्योति तो शाश्वत है। इसकी कोई समय-सीमा नहीं होती।

सिक्ख धर्म के विकास में योगदान : जिस बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, निपुणता, दृढ़ता, लगन और ज़िम्मेदारी के साथ आप जी ने सिक्खी की सेवा और नेतृत्व किया, उसका ख़्याल कर साधारण प्राणी की बुद्धि चक्रित हो जाती है। ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

जेतक थी गुरु घर की रीति।
अष्टम गुरु सब गही बिनीती।
यद्यपि हुते बाल बुध सोई।
तद्यपि बुधि ब्रिधन सम होई।
सभ विवहार और परमार्थ।
पूरन करें सिखन के स्वार्थ।
अज़मत और अरूज अपारा।
अष्टम गुर बहु बिध बिसतारा।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब द्वारा छोटी आयु में सुयोग्य ढंग से सिक्खों की आध्यात्मिक रहनुमाई करना आप जी की रूहानी कला का महान करिश्मा है। आपने दूर प्रदेशों में धर्म-प्रचारक नियुक्त किये और सत्य के अन्वेषकों को उपदेश दिए।

सिक्ख धर्म में शरीर की पूजा की अपेक्षा शब्द की पूजा को उच्च स्थान दिया गया है। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के मुखारविंद से जो अमृत रूप आत्म उपदेशों का नूर गिरता था, वो गुरसिक्खों के हदय में से अज्ञानता दूर कर उन्हें उज्जवल किए जाता था। बेशक आप बाल-अवस्था में थे परन्तु योग्यता और करनी के कारण संपूर्ण थे। फ़ारसी की यह कहावत आठवें पातशाह पर उचित बैठती है-- ''बुज़ुर्गी ब अक्ल न बसाल।'' अर्थात् सियानप निर्मल बुद्धि और गुणों पर निर्भर है, न कि बड़ी आयु पर। आप जी ने गुरु-घर की सारी मर्यादा गुरमति के अनुसार निभाई और सिक्खों को सुयोग्य रहनुमाई प्रदान की। आपके मिकनातीसी शब्दों के प्रभाव और प्रचार का सदका सिक्खी ने दूर-दूर तक मकबूलिय हासिल की। भाई जैता जी और भाई लक्खी शाह जी जैसे अपना आप कुर्बान करने वाले अनेक श्रद्धालु सिक्ख सज गए। बहुत कम समय में ही श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई।

रामराय द्वारा विरोधता : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की बढ़ रही ख्याति को देख कर रामराय ईर्ष्या की आग में जलने लगा और उसने छोटे भाई की विरोधता करनी शुरू कर दी। दिल्ली दरबार में जाकर औरंगजेब के समक्ष फ़रियाद की कि ''बड़ा होने के

कारण गुरुतागद्दी पर मेरा हक है। मेरे साथ मेरे पिता ने नाइंसाफी की है। बादशाह आलमगीर! मैं आप जी का वफ़ादार हूँ और आगे से भी आपका ऋणी रहूँगा। गुरुता पर हक मेरा है।'' औरंगजेब बड़ा चालाक था। उसने सोचा कि अगर मेरे वफ़ादार को गुरुतागद्दी मिल जायेगी, तो मैं सब लोगों का धर्म-परिवर्तन बड़ी आसानी के साथ कर सकता हूँ। शाही हुक्म भेज दिया कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब दिल्ली आएं और बादशाह के साथ विचार-चर्चा करें! जब रामराय की शिकायत सुन कर औरंगजेब ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली दरबार में उपस्थित होने के लिए शाही कासद को चिट्ठी देकर कीरतपुर साहिब भेजा तो आप जी ने गुरु-पिता के अंतिम संदेश 'नहिं मलेछ को दर्शन दै हैं' को समर्पित होकर औरंगजेब को दिल्ली जाकर मिलने से साफ़ इन्कार कर दिया। 'सूरज प्रकाश' के कर्ता ने इस घटना को इस तरह बयान किया है :

सुनि के श्री हरिक्रिशन सुजाना।
सभिनि सुनावति बाक बखाना।
नहिं मलेछ को दर्शन दै हैं।
होइ समीप तिस को नहिं लै हैं।
इही नेम पित कीनि हमारे।
तिस प्रकार हम भी उर धारें।

जब राजा जय सिंह ने दिल्ली की संगत की तरफ से गुरु जी को दिल्ली पधारने के लिए विनती की तो आप जी ने संगत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए दिल्ली की तरफ कूच कर दिया। माता किशन कौर जी तथा अन्य प्रमुख सिक्ख आपके साथ चल पड़े।

अहंकारी पंडित का अहंकार तोड़ना : दिल्ली की तरफ जाते समय रास्ते में पंजोखरा नामक स्थान पर पड़ाव के दौरान अहंकारी पंडित लाल चंद गुरु पातशाह के पास आया और कहने लगा कि ''नाम तो 'हरिक्रिशन' रखा है, मगर क्या गीता-ज्ञान का कोई अनुभव है आपको? श्री कृष्ण जी ने तो गीता रची थी, आप गीता के अर्थ करके बताओ!'' श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने बड़े प्रेम सहित उससे कहा कि ''अगर तुम गीता अर्थ- ज्ञान जानना चाहते हो तो हमारे किसी भी साधारण से साधारण सिक्ख व्यक्ति को ले आओ, वो इसके अर्थ कर बता देगा।'' इतिहास गवाह है कि एक छज्जू नामक व्यक्ति को लाया गया। सर्वकला समर्थ गुरु जी ने अपने पवित्र हाथों से एक छड़ी उसके सिर पर रख कर कहा, ''पंडित जी को गीता के अर्थ कर समझायो!'' उसने सहज ही विवेक बुद्धि से गीता के अर्थ कर सबको अचंभित कर दिया। पंडित लाल चंद गुरु-चरणों पर गिर पड़ा और उसने क्षमा माँगी। इस प्रकार आठवें गुरुदेव ने लाल चंद पंडित का अहंकार तोड़ा। पंजोखरा की संगत को निहाल किया और आगे दिल्ली की तरफ चल पड़े।

दिल्ली में सिक्ख धर्म का प्रचार और विस्तार : दिल्ली पहुंचने पर राजा जय सिंह और सिक्ख संगत ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का भारी स्वागत किया। राजा गुरु-घर का पक्का श्रद्धालु था। उसने आप जी का निवास अपने बंगले में करवाया। वह निजी तौर पर गुरु जी की सेवा में उपस्थित रहा। एक दिन उसकी रानी ने सतिगुरु के दीदार करने की इच्छा प्रकट की तो राजा ने गुरु जी को महल में बुला लिया। रानी ने गुरु जी की दिव्य दृष्टि को परखने के लिए खुद दासियों वाले कपड़े पहन लिए और उनमें शामिल होकर बैठ गई। गुरु जी ने अपनी छड़ी रानी के सिर पर रख कर चेहरे की तरफ ध्यान के साथ देखा और कहा, ''यही है पटरानी!'' गुरु जी ने रानी और राजा की कामना पूरी की। राजा गुरु साहिब की आत्मिक श्रेष्ठता से बहुत प्रभावित हुआ।

उसने यही कौतुक बादशाह औरंगजेब को भी जाकर बताया तो बादशाह ने बड़े भाई रामराय द्वारा गुरगद्दी के हक के लिए, श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के विरुद्ध दी गई दरखास्त को ख़ारिज कर दिया। निष्कर्ष यह हुआ कि रामराय की साजिश सिरे न चढ़ सकी।

राजा जय सिंह के बंगले पर रोज़ाना हरि-यश और कीर्तन होने लगा। दिल्ली की संगत उमड़ कर सतिगुरु के दर्शन करने के लिए आती और सतिसंग का लाभ उठा कर निहाल होती। गुरु जी नाम-बाणी के उपदेश के माध्यम से संसारी जीवों के तन-मन के असाध्य रोग दूर किया करते थे। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के जीवन और उपदेशों को देखते हैं, तो सहजता से स्पष्ट हो जाता है कि आप जी का जीवन, चिंतन, उपदेश और संदेश शुद्ध रूप में गुरबाणी- सत्य पर गुरबाणी रंग वाला है। गुरु जी ने वर्ण-विभाजन के सिद्धांत का सख्ती के साथ विरोध किया, अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी, स्त्री को समाज में सम्मान प्रदान किया, कन्या-वध करने वालों का गुरु दरबार में आना मना कर दिया, नशे का प्रयोग न करने पर ज़ोर दिया आदि। आप जी ने उन सभी उद्देश्यों और आदर्शों पर निडरता के साथ पहरा दिया, जो गुरु-संस्था और सिक्ख लहर के माने गए थे। क्योंकि ज्योति और युक्ति एक ही थी, बाणी और बोल एक ही थे, दृष्टि और चिंतन एक ही था, आदेश और उपदेश एक-सा था, इसलिए श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने समकालीन सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए जो उपदेश दिए, वे इतने सुधार वाले, सार्थक और सृजनात्मक थे कि समकालीन समाज को पवित्र और आदर्श बनाने में वे बड़े सहायक सिद्ध हुए। निस्संदेह, सिक्ख धर्म के प्रचार और विस्तार के लिए आप जी ने अहम रोल अदा किया।

ज्योति-जोत समाना : इन्हीं दिनों दिल्ली में चेचक और हैजे की भयानक बीमारी फैली हुई थी। आपके पास रोगी आते। गुरु जी स्वय लोगों की पीड़ा दूर करने के लिए घरों में जाते और अपने हाथों से सेवा कर दुखियों के दुख दूर किया करते थे। दिन-रात चेचक से पीड़ित लोगों में विचरने के कारण गुरु जी पर भी इस बीमारी का हमला हो गया। रोग बढ़ जाने के कारण आप जी ने शहर से बाहर खुली जगह पर जाने की इच्छा प्रकट की। आप जी यमुना दरिया के किनारे रमणीय स्थान पर चले गए और कादर की कुदरत में अंतिम समय बिताया। एक दिन श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने माता जी और सिक्ख संगत को बताया कि उनका ज्योति-जोत समाने का समय नज़दीक आ गया है। फिर सिक्ख संगत को उपदेश दिया कि सभी ने परमात्मा के हुक्म की पालना करनी, सम्मान करना और कीर्तन करना। अंत में सिक्ख संगत को 'बाबा . . . बकाले! का संकेत देकर *''जिउ जल महि जलु आइ खटाना।। तिउ जोती संगि जोति समाना।।''* के अनुसार आप जी चैत्र सुदी १४, ३ बैसाख, संवत् १७२१ अर्थात् ३० मार्च, १६६४ ई. को ज्योति-जोत समा गए।

सहायक पुस्तकें :

१. सचखंड पत्र, अगस्त १९८३, पृष्ठ १९- २०; जुलाई १९८६, पृष्ठ १६; अक्तूबर-नवंबर १९९७, पृष्ठ २६-२७; जून, २००४, पृष्ठ ९
२. सिक्ख इतिहास, भाग प्रथम, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।
३. गुरमति प्रकाश, सितंबर १९७०, पृष्ठ ५०- ५१; जुलाई २००८, पृष्ठ १४.

बहादुर सिक्ख स्त्री : माता भाग कौर

*-डॉ. मनजीत कौर**

सिक्ख धर्म आधुनिक एवं वैज्ञानिक धर्म है। इस धर्म की जगत में विलक्षण पहचान है। सिक्ख इतिहास शहीदों की दास्तां है और इस शृंखला में स्त्रियों का भी विशेष योगदान है। सिक्ख धर्म स्त्री-पुरुष समानता की अद्भुत मिसाल है। स्त्री वर्ग को जितना सम्मान सिक्ख धर्म में नसीब हुआ है उतना किसी अन्य धर्म में हरगिज नहीं दिया गया। सर्वप्रथम विधाता की खूबसूरत रचना की निंदा करने वालों को आड़े हाथों लेते हुए श्री गुरु नानक पातशाह ने नारी को जगत-जननी एवं समग्र ब्रह्मांड को बांधकर रखने वाली, पुरुष की पूरक मानते हुए उसके हक में बुलंद नारा दिया। इस संदर्भ में गुरु जी का पावन फरमान है :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु।।
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु।।
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु।।
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।।

(पन्ना ४७३)

यही नहीं, बाबर द्वारा भारत पर किए गए आक्रमण के समय हुई स्त्रियों की दुर्दशा के संबंध में श्री गुरु नानक पातशाह का संवेदनशील हृदय चीत्कार कर उठा। मध्य काल में हुई स्त्री की अधोगति का उल्लेख उन्होंने अपनी बाणी में इस प्रकार किया है :

जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु।।
से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि।।
महला अंदरि होदीआ
हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि।। *(पन्ना ४१७)*

इस संदर्भ में डॉ. जगजीत कौर अपने एक आलेख में सटीक वर्णन करते हैं कि ''गुरु नानक पातशाह जी ने स्त्री वर्ग के शरीर पर लिपटा मध्यकालीन संकीर्ण सोच वाला मैला-कुचैला लिबास ही नहीं उतारा, बल्कि उसकी दुखती रगों और जख्मों पर प्यार, करुणा एवं सहानुभूति के फाहे भी रखे। उसके जख्म भरते गए। वह स्वतंत्र, स्वच्छंद वातावरण में उड़ानें भरने लगी। उसमें असीम आत्म-बल आया और तब उसने उस गौरवशाली इतिहास की सृजना की जिसे प्रतिदिन सिक्ख समाज अरदास में याद करता है-- जिन्हां सिंघां सिंघनिआं ने धरम हेत सीस दित्ते . . . ! सिंघों के साथ-साथ सिंघनियों ने भी इतिहास रचने में पूरा योगदान दिया। सभी गुरु साहिबान ने स्त्री-कल्याणार्थ कार्य-योजनाएं बनाईं।''

इस प्रकार हमारे समक्ष गुरु-महिलों, गुरु-माताओं, गुरु-बहनों एवं गुरु-पुत्रियों के ऐसे महान आदर्श प्रस्तुत हैं, जिनसे प्रेरणा लेकर हम

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

भी बेशकीमती जीवन को परोपकार हेतु लगाकर सफल और सार्थक कर सकते हैं।

गुरु साहिबान द्वारा स्त्री वर्ग को सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ आत्म-रक्षा हेतु सैनिक-शिक्षा ग्रहण करने की भी प्रेरणा की। माता भाग कौर का जीवन इसका पुख्ता प्रमाण है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्त्री वर्ग को भी अमृत-पान का अधिकार देकर, उसे पांच ककार धारण करने का गौरव प्रदान कर उसे सिंघनी बनने हेतु प्रेरित किया। उसके नाम के साथ 'कौर' शब्द लगाकर उसके स्वाभिमान को कई गुणा बढ़ा दिया। प्रो. पिआरा सिंघ पदम के अनुसार, 'वार भगउती' अथवा 'चंडी की वार' में स्त्री के वीरांगना रूप को दर्शाया गया है, जहां कमजोर मानी जाने वाली स्त्री वीरांगना बनकर बड़े-बड़े अभिमानी दैत्यों को परास्त कर सकती है तो वह मुगलों रूपी दानवों का सामना क्यों नहीं कर सकती?

जन्म एवं बचपन : इतिहासकारों के मतानुसार रावी तथा ब्यास नदियों के बीच का इलाका पंजाब का दिल कहलाता है। उसे 'माझा' क्षेत्र कहा जाता है। यहां के निवासी अपनी धार्मिकता, बहादुरी एवं दृढ़ इच्छा-शक्ति के परिणामस्वरूप देश-धर्म हेतु कुर्बानी देने में अग्रणी रहे हैं। इसी इलाके का एक गांव है-- 'झबाल', जो तरनतारन जिले में स्थित है। झबाल निवासी अपनी गुणवत्ता, बहादुरी, प्रेम-भावना एवं दिलेरी के लिए विख्यात हैं। यहां के लोगों ने श्री अमृतसर साहिब के निर्माण तथा सरोवर आदि बनाने में दिन-रात तन-मन-धन से सेवा की।

झबाल के चौधरी भाई लंगाह गुरु-घर के अनन्य श्रद्धालु सिक्ख थे। इनके छोटे भाई चौधरी पीरो सिंघ थे। इनका परिवार गुरु-घर के प्रति अटूट श्रद्धा रखता था। पीरो सिंघ के दो सुपुत्र थे-- मालो शाह तथा जीवन शाह। मालो शाह के घर चार पुत्रों के पश्चात् एक पुत्री का जन्म १६६६ ई. में हुआ। ऐसा माना जाता है कि इस पुत्री के जन्म के साथ ही इनका परिवार उन्नति के शिखर पर पहुंच गया। इसी कारण इस बच्ची का का नाम परिवार ने 'भाग भरी' रखा और इनकी सखियां इन्हें 'भागो' नाम से बुलाने लगीं।

बचपन में ही माता-पिता इन्हें गुरु-दरबार ले जाते थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन एवं पावन उपदेशों का इन पर बहुत प्रभाव पड़ा और इन पर अध्यात्म का रंग चढ़ने लगा।

बचपन से ही इन्हें गुरबाणी पढ़ने तथा कीर्तन श्रवण करने में रुचि थी। इनका मन भक्ति में लीन होता गया। जब माता भागो जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में जाने लगीं, वहां पर युद्ध की होने वाली तैयारियों का अत्यन्त गंभीरता एवं सावधानी से अवलोकन करती रहीं और घर पर आकर शस्त्र-विद्या सीखना प्रारंभ किया। निरंतर अभ्यास करते हुए शीघ्र ही तेग, बरछा, भाला चलाने में प्रवीण हो गईं। घुड़सवारी, गतका, तीरंदाजी, नेजा तथा अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र चलाने में महारत हासल कर ली। इस प्रकार भक्ति के साथ-साथ शक्ति का रंग भी चढ़ता गया और माता भागो जी ने संत-सिपाही, वीर योद्धा वाला स्वरूप धारण कर लिया।

माता भागो से माता भाग कौर : बाल्यावस्था में

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन कर अध्यात्म के रंग में रंगने वाली माता भागो श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की सर्जना के पावन अवसर पर अपने परिवार सहित उपस्थित थीं। वहां पर इन्होंने अमृत-पान किया और 'भाग कौर' के रूप में जानी जाने लगीं। इनका विवाह सरदार निधान सिंघ के साथ होने का उल्लेख मिलता है। इनके पति भी गुरु-घर के पूर्ण श्रद्धालु गुरसिक्ख थे।

अद्‌भुत वीरता एवं नेतृत्व-क्षमता : श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बेमिसाल शहादत १६७५ ई. में हुई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गुरुतागद्दी पर विराजमान हुए। इस दौरान जुल्मो-सितम का दौर था। औरंगजेब के मुगल प्रशासक गैर-मुस्लिमों पर जुल्म ढा रहे थे और साथ ही बाईधार के राजा भी गुरु जी की समन्वयवादी नीति तथा मानवतावादी दृष्टिकोण को सुदृढ़ करने के खिलाफ थे। गुरु जी के दिनो-दिन बढ़ते तेज प्रताप से मुगल और बाईधार के राजा ईर्ष्यावश होकर युद्ध की तैयारी में लगे थे।

गुरु जी ने किलों का निर्माण करवाया, सिक्खों को शस्त्र-विद्या में निपुण किया और बाणी उच्चारण कर तथा वीर रस काव्य की रचना करवा कर उनके मनोबल को ऊंचा किया। सबसे महत्वपूर्ण कार्य, गुरु जी द्वारा अमृत की शक्ति का संचार करना था।

लगभग छः महीने तक मुगल सेना द्वारा श्री अनंदपुर साहिब में किले को डाला गया। घेरा, दिल्ली की मुगल सरकार, सूबा लाहौर, सूबा सरहिंद और बाईधार के हिंदू राजाओं की सेना का घमासान युद्ध, किले में रसद-पानी की किल्लत, लाखों की संख्या में मुगल सेना का होना और सिक्ख फौज का कम गिनती में होने के बावजूद भी अत्यंत उत्साहपूर्वक दुश्मन की फौज का भारी नुकसान करना। इस दौरान भूखे-प्यासे लड़ते हुए उन सिक्खों में से माझा क्षेत्र के चालीस सिक्खों के एक जत्थे ने गुरु जी का साथ छोड़ने का मन बना लिया और गुरु जी के समक्ष जाकर विनती की अब हमें यहां से जाने की आज्ञा दी जाए! गुरु जी ने कहा कि तुम जा सकते हो! चालीस सिक्खों ने गुरु जी को 'बेदावा' लिख कर दिया था, जिसमें लिखा था-- ''आप हमारे गुरु नहीं और हम आपके सिक्ख नहीं!''

इस संदर्भ में डॉ. जसवंत सिंघ नेकी अपनी पुस्तक 'अरदास दरशन गुरु अभ्यास' के पृष्ठ ९२ पर 'बेदावा' लिखने वालों की मनोस्थिति का बड़ा सटीक वर्णन करते हैं-- ''पता नहीं किस कमजोर क्षण में वे यह 'बेदावा' लिख आए थे! उनकी आत्मा में तो सतिगुरु की याद अभी भी कायम थी। शायद लंबी भूख और बेबसी नहीं सहन कर सके!... दुश्मन ने भी बेदावा लिखने वालों को रास्ता दे दिया था। जब ये (४० सिक्ख) अपने घर पहुंचे, इनकी पत्नियों ने धिक्कारते हुए कहा, आ गए हो अपने गुरु को पीठ दिखाकर! तुम घर में बैठो चूड़ियां पहन कर! हम जायेंगी सतिगुरु का साथ देने। यह जो जान बचा कर आये हो, यह कब तक तुम्हारा साथ निभाएगी? कहने का तात्पर्य था मौत तो आखिर आनी ही है।'' जब इस घटनाक्रम की खबर माता भाग कौर को लगी, उन्होंने बड़ी सूझबूझ से काम लिया।

सूझवान सेनापति के रूप में : माता भाग कौर ने सर्वप्रथम एक सुलझे हुए सेनापति की तरह सिक्खों की सभा आमन्त्रित की। जो सिक्ख 'बेदावा' लिख कर दे आये थे, उन्हें अपनी गलती का एहसास हो चुका था। वे देख रहे थे कि जिनके बेटे, भाई अथवा पति जंग में शहीदी प्राप्त कर अपना जन्म सफल कर गए थे, उनका परिवार ईश्वर का शुक्राना अदा कर रहा था और माता भाग कौर की प्रेरणा से अत्यधिक गिनती में सिंघ-सिंघनियां अपने देश-धर्म हेतु जान न्यौछावर करने को उत्साहित हो रहे थे। माता जी के उद्‌बोधन ने गजब की जनजागृति ला दी। अब उन चालीस सिक्खों के अंदर पश्चाताप का भाव पूर्णतया जागृत हो चुका था। उन्हें मुखातिब होकर माता भाग कौर ने कृपाण लहराते हुए अति जोशीले अंदाज में सबकी आत्मा को झकझोरा। उनकी भूल क्षमा करवाने हेतु प्रायश्यित कर रहे बेदावीए सिक्खों को दिलासा दिया और कहा कि ''समस्त मोह-माया के बंधन तोड़ कर शहीदी का अमर जाम पीने हेतु माझा क्षेत्र का जत्था कल ही रवाना होगा। आप दयालु सतिगुरु की शरण में जाकर अवश्य क्षमा कर दिए जाओगे!'' इस प्रकार सबको आश्वस्त कर माता भाग कौर के नेतृत्व में चालीस बेदावीए सिंघों के साथ कुछ अन्य सिंघ-सिंघनियां गांव झबाल से अकाल पुरख वाहिगुरु के चरणों में अरदास कर, जैकारे गुँजाते हुए रवाना हुए। इतिहासकारों के मतानुसार मार्ग में अनेक सिक्ख और भी साथ मिलते गए।

दूरदृष्टि वाली माता भाग कौर एक सुघड़ सेनापति के रूप में अनुमान लगा चुकी थीं कि इस समय कहां पहुँच कर दुश्मन की फौज को गुरु जी का पीछा करने से रोकना है। सीधा 'खिदराणे की ढाब' पहुंचीं, जहां पर पानी का स्रोत था। बाकी सारा इलाका शुष्क था। मुगल सेना को प्यासे मारने के लिए युद्ध के दांवपेच भरा ऐसा निर्णय कुशल सेनापति ही ले सकता था। 'Historical Aspects, Importance And Present Relevance Of The Teachings Of Sri Guru Gobind Singh Ji, नामक पुस्तक, जो कि Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded द्वारा प्रकाशित है, के पृष्ठ ३०८ पर इस संदर्भ में उस युद्ध की तसवीर को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है -- ''३०० के करीब शूरवीर अपनी शहादत देने के लिए 'खिदराणे की ढाब' पहुंच चुके थे। सिंघों ने अपने कछहिरे, चादर व अन्य वस्त्र आस-पास की झाड़ियों पर इस तरह डाल दिए कि झाड़ियां दूर से तंबू नज़र आएं। इनके नीचे एक-एक, दो-दो सिक्ख मौजूद रहे। शाही फौज को लग रहा था कि सिक्ख फौज बड़ी संख्या में है। शाही फौज दस हजार के करीब थी। जैसे ही शाही फौज ढाब के पास पहुँची, माता भाग कौर ने 'बोले सो निहाल' का जैकारा लगाया और झाड़ियों के नीचे से तीरों की बरसात होना शुरू हो गई। इस अचानक हुए हमले से शाही फौज में भगदड़ मच गई। माता भाग कौर और भाई महां सिंघ अपनी सेना का मार्गदर्शन कर रहे थे। मुट्ठी भर सिक्ख भूखे शेऱ की भाँति शाही फौज पर टूट पड़े। माता भाग कौर का घोड़ा जख्मी हो गया, फिर भी वे दोनों हाथों से कृपाण चलाए जा रही थीं। यह

पहला मौका था जब मुगलों ने एक स्त्री के हाथों अपने को धराशायी होते देखा था।''

दूसरी तरफ ऊँचे टीले (टिब्बी) से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दुश्मनों पर तीरों की बौछार कर सिक्खों का रक्षण करते हुए शाही सेना के लिए मानों प्रलय ला दी हो। सिक्ख पूरी शूरवीरता का परिचय देते हुए शहादत प्राप्त कर रहे थे। शाही सेना मैदान छोड़ भाग खड़ी हुई। गुरु साहिब शहीद एवं घायल सिक्खों के पास पहुंचे। एक-एक सैनिक के पास गए। बड़े प्यार से खिताब प्रदान कर रहे थे-- ''यह मेरा पांच हजारी सिंघ है! यह मेरा दस हजारी सिंघ है। यह मेरा बीस हजारी सिंघ है! यह मेरा तीस हज़ारी सिंघ है! . . . आदि।'' भाई महां सिंघ की सांसें मंद गति से चल रही थीं। फिर जैसे ही भाई महां सिंघ के पास पहुंचे तो भाई महां सिंघ ने जख्मी हाथों से गुरु जी के चरण छू लिए और सिसक उठे। गुरु जी ने बड़े प्यार से उनका सिर अपनी गोद में लिया और बोले -- ''भाई महां सिंघ! कैसे हो?'' ''गुरु जी! आपके दर्शन कर मेरा जन्म-मरण सफल हो गया।'' ''भाई महां सिंघ! कोई इच्छा हो तो बताओ!'' ''पातशाह! कृपा के घर में आए हो तो दया करो! वो 'बेदावा' फाड़ दो! हमारी टूटी गाँठ लो!'' इतना कहने की देर थी, गुरु जी ने कमरकस्से में से वह कागज का टुकड़ा 'बेदावा' निकाला और उसके पुर्जे-पुर्जे कर हवा में उड़ा दिया। फिर बड़े प्यार से कहा, ''भाई महां सिंघ! 'बेदावा' फाड़ने के साथ-साथ तुम सबका जन्म-मरण भी कट गया! तुम लोग 'मुक्त' हो गए हो! आज से तुम 'मुकते' कहलाओगे!'' भाई महां सिंघ के चेहरे पर अजब-सी मुस्कान थी। गुरु जी का अनंत शुक्राना अदा करते हुए, गुरु जी की पावन गोद में असीम शांति का अनुभव करते हुए वे चिर निद्रा में सो गए। गुरु जी ने उन्हें अपने करकमलों से नीचे लिटा दिया और जैसे ही आगे कदम बढ़ाए, फिर किसी के हाथों ने गुरु जी के चरण पकड़े। गुरु जी नीचे झुके। लहू से भीगा शरीर, अचेत अवस्था में ये माता भाग कौर थीं। गुरु जी ने बड़े प्यार से कहा, ''तुम बहुत बहादुर हो! तुमने केवल शत्रुओं को ही नहीं मार भगाया, अपितु तुम्हारी प्रेरणा ने असंख्य लोगों को 'मुक्ति' का मार्ग दिखाया है और उस पर चलना भी सिखाया है। आज से यह 'खिदराणा' 'मुकतसर' नाम से प्रसिद्ध होगा।'' भक्ति और शक्ति की इस अद्‌भुत वीरांगना को उपचार हेतु ले जाया गया। इसके बाद वापिस गाँव झबाल न जाकर माता भाग कौर ने शेष जीवन गुरु जी की सेवा में ही समर्पित कर दिया।

नांदेड़ की धरती पर जाकर आपने सिक्खी का खूब प्रचार-प्रसार किया और संगत को गुरबाणी के साथ जोड़ा। माता भाग कौर का नाम सिक्ख इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ऐसी ही महान नारियों हेतु किसी शायर के ये शबद कितने सार्थक हैं !

सशक्त नारियां देश की तकदीर!
बदल देंगी कल की तसवीर।

शहीद भाई मनी सिंघ जी

– ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल (दिवंगत)

सिक्खों को खत्म करने का बेहतरीन ढंग ख़ान बहादुर ज़करिया ख़ान ने यही समझा कि उन्हें श्री अमृतसर साहिब में दर्शन-स्नान करने हेतु न आने दिया जाये, क्योंकि काजियों द्वारा उसे बताया गया था कि श्री हरिमंदर साहिब के सरोवर में स्नान कर सिक्ख अमर हो जाते हैं। इस कार्य के लिए सूबेदार ने काज़ी अबदुर रहमान ख़ान को श्री अमृतसर साहिब का हाकिम नियुक्त कर भेजा। थोड़े दिनों बाद ही सरदार सुक्खा सिंघ माड़ी कम्बोकी और स. थराज सिंघ के हाथों काज़ी अबदुर रहमान ख़ान मारा गया।

फिर सूबेदार ने और सख़्त हुक्म देकर दीवान लखपत राय को श्री अमृतसर साहिब भेजा। उसने मिट्टी डलवा कर सरोवर का बहुत सारा हिस्सा पाट दिया। तंग आकर सिक्ख घर-घाट छोड़ कर जंगलों, पहाड़ों या बीकानेर के मरुस्थलों की तरफ चले गए। माझा क्षेत्र में सिक्खों के दर्शन भी दुर्लभ हो गए।

भाई साहिब भाई मनी सिंघ जी १७२१ ई. से सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में ग्रंथी के रूप में कार्यरत थे। वे निर्मले संतों के लिबास (सफ़ेद कपड़ों) में रहते थे। वे संगत को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अर्थ भी समझाते थे। निर्मले संतों की प्रणाली और गुरबाणी के टकसाली अर्थ उनसे ही प्रचलित हुए। उनके पास हर समय पंद्रह-बीस संत, फ़कीर विराजमान रहते और गुरु का लंगर भी चलता रहता। हाकिमों द्वारा भी भाई साहिब को सबका साझा (फ़कीर) समझा जाता था।

दीवान लखपत राय और काज़ी अबदुर रज़ाक के कड़े प्रबंध के कारण सिक्खों का श्री अमृतसर साहिब में आना बंद हो गया। भाई मनी सिंघ जी की आत्मा के लिए यह वियोग असहनीय था। वे संगत के खुले दर्शन करने के लिए कोई योजना बनाने लगे।

इस मतलब के लिए भाई साहिब ने श्री अमृतसर साहिब में नियत हाकिम अबदुर रज़ाक के साथ मेलजोल पैदा किया। भाई साहिब ने काज़ी को कुछ तमा (लालच) देना माना, तो काज़ी इस बात पर रज़ामंद हो गया कि भाई साहिब के प्रबंध आधीन दीपमाला का आयोजन हो।

दो हज़ार रुपए काज़ी अबदुर रजाक को घूस और पाँच हज़ार ठेके के रूप में लाहौर सरकार को देने का फ़ैसला हुआ। दीपमाला का मेला दस दिन लगना तय हुआ। यह शर्त साफ़ तौर पर पक्की की गई कि उतने दिन सरकारी फ़ौज का अधिकारी या कोई अन्य सरकारी कर्मचारी श्री अमृतसर साहिब नहीं आएगा। यहाँ के स्थानीय हाकिम भी मेले में दख़ल नहीं देंगे। मेले में आने वाली संगत या सिंघों के जत्थों के आने में सरकार की तरफ से कोई रुकावट खड़ी नहीं की जाएगी। संगत के चले जाने के बाद ठेके की रकम सरकारी खजाने में संचित करा दी जायेगी।

काज़ी को इसमें से दो हज़ार गुप्त तौर पर मिल जाने थे। अत: उसने भाई साहिब के हक में लिख कर ये शर्तें लाहौर भेज दीं। काज़ी के ज़ोर देने पर सूबेदार लाहौर ने भी ये शर्तें स्वीकार कर लीं।

मेला लगने का फ़ैसला हो गया। तैयारी होने लगी। श्री अमृतसर साहिब के आस-पास की संगत ने बड़े उत्साह के साथ पाटे हुए सरोवर की सफ़ाई की और कुओं आदि से पानी डालकर सरोवर भर दिया। भाई साहिब का असली निशाना था कि जगह-जगह बिखरे हुए जत्थे एकजुट किए जाएं, ताकि पंथ की बेहतरी के लिए कोई ठोस कार्यक्रम बनाया जाये। उन्होंने चिट्ठियाँ लिख कर श्रद्धालु सिक्खों के माध्यम से जगह-जगह संगत को भेज दीं।

ये चिट्ठियाँ भेज कर भाई मनी सिंघ जी आवश्यक तैयारी करने लगे। स्थानीय संगत के दिल में मेले के प्रति उत्साह था। भाई साहिब का मानना था कि मेला बड़ा लगेगा और चढ़ावा भी काफी हो जायेगा। उसमें से सात हज़ार हाकिमों को देकर बाकी बचत के साथ सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की सेवा की जायेगी।

दूसरी तरफ़ मुसलमान हाकिम कुछ और ही सोच रहे थे। उनमें धर्म-ईमान तो कोई था नहीं। उन्होंने सोचा कि पहले जगह-जगह जंगलों में सिंघों को ढूँढते फिरते थे, मगर वे हाथ नहीं आ रहे थे। अब अच्छा मौका हाथ लगेगा। सभी सिंघ सरदार मेले पर इकट्ठा होंगे। यहीं पर घेरा डाल कर सबको पकड़ लो और दिल्ली पहुँचा कर बादशाह से इनाम हासिल करो। इस प्रकार बादशाह खुश हो जायेगा, साथ ही हमारे रास्ते में से सदा के लिए काँटा निकल जायेगा।

दिल में यह कुटिल नीति धारण कर सूबेदार ने बहुत सारी फ़ौज मेले का प्रबंध करने के बहाने श्री अमृतसर साहिब भेज दी। नये आए फ़ौजी अधिकारियों ने श्री अमृतसर साहिब के चारों तरफ़ डेरे डाल लिए, जहाँ से ज़रूरत के समय झटपट घेरा डाला जा सके। यह हालत देख कर भाई मनी सिंघ जी सब कुछ ताड़ गए। वे सोचने लगे, ''हाकिमों की नीयत बदल गई है। संगत इकट्ठा हो गई, तो यह भले की जगह, पंथ का नुकसान होगा। बेहतरी इसी में है कि संगत को आने से रोक दिया जाए और निर्दयी हाकिमों का गुस्सा अपने सिर बरदाश्त कर लिया जाए।'' भाई साहिब ने संगत और जत्थों को वापसी चिट्ठियाँ भेज दीं।

समय पर खबरें पहुंच जाने के कारण संगत न आई। न मेला लगा और न ही चढ़ावा आया। गिनती के कुछ उदासी संत, निर्मले सिक्ख और सूफ़ी फ़कीर ही इकट्ठा हुए।

मेले का दिन बीत जाने के बाद सूबेदार के हुक्म से दीवान लखपत राय ने भाई मनी सिंघ जी से तय हुई धनराशि की माँग की।

भाई मनी सिंघ जी का यह एतराज न माना गया कि अहदनामे की शर्त के विपरीत, श्री अमृतसर साहिब में शाही फौज के आ जाने के कारण मेला नहीं लगा और चढ़ावा भी नहीं आया। काज़ी अबदुर्र रजाक को भी घूस का दो हज़ार नहीं मिला था, इसलिए वो भी बड़े आक्रोश में था। उसने भी लखपत राय को भड़काने में कोई कसर बाकी न छोड़ी। लखपत राय ने भाई मनी सिंघ जी को गिरफ़्तार कर लाहौर ख़ान बहादुर की कचहरी में जा पेश किया। सिक्खों का सबसे बड़ा ग्रंथी होने के कारण, सांप्रदायिक काज़ी और मुल्ला भाई साहिब के साथ ईर्ष्या करते थे। उन्होंने सूबेदार को पहले ही बहुत भड़का रखा था। कचहरी में पेश होते ही सूबेदार ने भाई साहिब को धमकाना शुरू कर दिया।

मुग़ल हाकिमों का यह स्वभाव था कि अगर वे खुद झूठे होते, तो दूसरों को और भी ज्यादा धमकाते। ख़ान बहादुर जानता था कि हमारी फ़ौज

के जाने के कारण मेला नहीं लगा, फिर भी वो उलटा भाई मनी सिंघ जी पर दबाव बनाने लगा कि तुमने अब तक अपने आप आकर तय हूई राशि जमा क्यों नहीं करवाई। आगे से भाई साहिब ने खरी-खरी कह सुनाई।

सच्ची बात सुन कर सूबेदार आग बबूला हो उठा। उस शख्सी हुकूमत के हाकिमों में सत्य सुन कर सहन करने की आदत नहीं थी। तब लोकराज नहीं, एक आदमी का राज था, और जो वो कहे या करे, वही इंसाफ़ होता था। इकरारनामे की शर्त के विपरीत श्री अमृतसर साहिब फौज क्यों भेजी गई, इस बात का जवाब सूबेदार के पास कोई नहीं था। भाई साहिब का जुर्म यह माना जा रहा था कि वे सामने से जवाब दे क्यों दे रहे हैं। अत: ख़ान बहादुर क्रोधवश। जो मुँह आया, बोलता गया। गुनाह अपना और सज़ा दूसरे को। साथ ही किसी सिक्ख को सज़ा देने के लिए तो इतना ही काफ़ी था कि वो सिक्ख है। शराअ तो किसी गैर-मुसलमान को ज़िंदा देखना बर्दाशत नहीं करती थी। तब शराअ यह थी कि जो मुफ्ती के मुँह में से निकले, वैसा ही हो। बचने का रास्ता एक ही था- इसलाम धारण करना। भाई मनी सिंघ जी के सामने भी यही सवाल रखा गया। काज़ी तथा अन्य सलाहकारों ने भी भाई साहिब को यही सलाह दी कि मुसलमान बन कर जान बचा लें, उन्हें इज्जत व धन प्रदान किया जायेगा, जिससे वे अच्छा जीवन बसर कर सकेंगे, नहीं तो मौत जिस ढंग की आयेगी, उस बारे में उन्हें अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए।

ये सभी धमकियां और ख्यालात सुन कर भाई साहिब ने उत्तर दिया-- ''ख़ान बहादुर! क्या पहले कभी किसी सिक्ख ने धर्म परिवर्तित कर जान बचायी है? नहीं न! मुझसें भी वैसी ही आशा रखो! मेरा और अपना वक्त बर्बाद मत करो! जो करना है, जल्दी करो! ख़ालसे को मौत का कैसा भय? मौत चाहे किसी भी ढंग से आ जाये, इस बात की कोई चिंता नहीं! खालसा तैयार-बर-तैयार है!''

ये साहस भरे शब्द सुन कर पूरी कचहरी में मानों आग लग उठी हो। मुफ्ती से फ़तवा जारी करवा दिया कि भाई साहिब के बंद-बंद काट दिए जाएँ। इस पर शाही प्रवानगी की मोहर लगा कर सूबेदार ने कहर ढाते हुए जल्लाद को भाई साहिब के शरीर के बंद-बंद काट कर शहीद करने का हुक्म सुना दिया।

भाई मनी सिंघ जी को यह अनोखी सज़ा देने की ख़बर लाहौर निवासी सिक्खों तक पहुँची, तो चारों तरफ हाहाकार मच गई। आज तक कभी किसी बड़े से बड़े गुनाहगार को बंद-बंद काटे जाने की सज़ा नहीं दी गई थी और संत-स्वरूप भाई मनी सिंघ जी का तो कसूर ही कोई नहीं था। सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के ग्रंथी होने के कारण भाई साहिब का पूरे पंथ में अति सम्मान था। लाहौरी सिक्खों ने सोचा कि सरकार ठेके की रकम ही लेना चाहती है, तो हम उगाही कर अदा कर देंगे। कुछ सिक्ख भाई साहिब से इस कार्य की आज्ञा लेने के लिए आ पहुँचे।

सिक्खों की यह विनती सुन कर भाई मनी सिंघ जी ने कहा, ''गुरु प्यारे सिक्खो! क्या आप समझते हो कि ऐसा करने से काल टल जायेगा? याद रखो! ज़ालिम धनराशि नहीं, हमारी जान लेना चाहता है। मृत्यु से घबराना . . . काहे को! सिक्ख तो मृत्यु के बाद अमर जीवन प्राप्त कर लेता है। पंथ के हित में यह शरीर लग जाये, और क्या चाहिए? क्या उस मौत को आप सतिगुरु की कृपा नहीं समझते, जिसकी याद बाद में युगों तक रहेगी? आप मेरी चिंता मत करो! और हां, सिक्खों की मेहनत की

कमाई से ज़ालिम के घर भर कर मैं यह नश्वर शरीर नहीं बचाना चाहता। सिक्ख आत्म-स्वरूप है। आत्मा अमर है। सिक्ख कभी मरता नहीं। आप किस बात की चिंता करते हो? मैंने ज़ालिम को न धन देकर जान बचानी है और न उससे धन लेकर अपने इरादे से टलना है।''

भाई साहिब को नख़ास चौंक (लाहौर) की कत्लगाह में लाया गया। सादिक का इम्तिहान होता देखने के लिए लोग इकट्ठा हो गए। भाई साहिब चौंकड़ी मार कर बैठ गए। जल्लाद ने छुरी उठाई और पहला वार कलाई पर करने लगा। भाई साहिब ने हाथ पीछे कर लिया। जल्लाद ने कहा, ''बस, इतना ही गर्व था अपने धैर्य पर! अभी तो मैं पहला वार ही करने वाला था और तुम घबरा गए! मरने को दिल नहीं करता, तो इसलाम धारण कर जान बचा लो!''

भाई साहिब ने उसी प्रकार गंभीर भाव से कहा, ''भाई! मैं मृत्यु से नहीं डरता! मृत्यु तो हमारी धात्री है, जो पुराना चोला (शरीर) उतार कर नया पहना देती है। न मैं तुम्हारे तेज़ हथियारों को देखकर घबराया नहीं हूं, क्योंकि दुख शरीर को है और सिक्ख तो 'ज्योति-स्वरूप' है। मैंने तो इसलिए हाथ पीछे किया है कि तुम अपने मालिक की अवज्ञा करने वाले थे। तुम पहला वार कलाई पर करने वाले थे, जबकि तुम्हारे मालिक का हुक्म है कि मेरे बंद-बंद काटने हैं। देख, कलाई से पहले एक-एक उंगली में कितने-कितने जोड़ हैं! अतः हुक्म की पालना कर भाई!''

इतना सुन कर देखने वाले तो दंग रह गए, परन्तु जल्लाद को और भी गुस्सा आ गया। जल्लाद के दिल में दया नहीं होती। दया हो, तो वह ऐसा पेशा ही क्यों इख्तियार करे! शिकार शिकारी को ललकारे, तो उसके तरकश के तीर और भी ज़हरीले हो जाया करते हैं। अब दोनों पक्ष तैयार हो गए। भाई साहिब समाधि लगा कर जपु जी साहिब का पाठ करने लगे और जल्लाद ने अपना काम आरंभ कर दिया।

बंद-बंद काटे गए, मगर सिदकी सिक्ख ने उफ तक न की। शहीदों के इतिहास में यह अनोखी कुर्बानी थी। यह घटना नख़ास चौंक (लाहौर) में १७३८ ई. में हुई। लाहौर के सिक्खों द्वारा भाई साहिब के टुकड़े-टुकड़े हो चुके शरीर का दाह संस्कार शाही किले के पूरबी दरवाज़े के सामने किया गया। उसी स्थान पर आज तक भाई साहिब का शहीदी-स्थल संरक्षित है। इस शहादत ने सिक्खों में नये सिरे से जोश पैदा कर दिया। भाई मनी सिंघ जी सिक्ख पंथ में पूर्ण संत करके माने जाते हैं। प्रत्येक सिक्ख के दिल में उनके लिए असीम श्रद्धा है।

भाई साहिब को दी गई अकथनीय यातनाओं की ख़बर आग की तरह पूरे पंथ में फैल गई। नौजवानों ने तेगें निकाल लीं और जगह-जगह मार-काट शुरू हो गई। काज़ी अबदुर्र रज़ाक को सरदार अग्घड़ सिंघ ने पार बुला दिया। सिंघों ने काज़ी का गाँव अलीगढ़ (ज़िला गुजरांवाला) उजाड़ कर उसका नाम 'अकाल गढ़' रख दिया। फ़तवा देने वाले काज़ी को सरदार थराज सिंघ ने कत्ल कर दिया। सिंघों ने सूबेदार ख़ान बहादुर को भी कत्ल करने की साज़िश बनाई, लेकिन वो सफल न हुई।

थोड़े शब्दों में इतना ही कहना काफ़ी है कि इस शहादत के बाद सिंघ ऐसे भड़के कि हुकूमत उन्हें काबू न कर सकी।

भाई मनी सिंघ जी की शहादत ने सिक्खों में नया उत्साह भर दिया।

शहीद भाई तारू सिंघ जी

– डॉ. गुरमीत सिंघ*

शहीद भाई तारू सिंघ जी की शहादत धर्म के मार्ग पर चलने वाले लोगों का लाईट हाऊस की तरह मार्गदर्शन करती है। सिक्ख अरदास में रोज़ाना उन शहीद सिंघ-सिंघणियों को याद किया जाता है जिन्होंने सिक्खी केशों-श्वासों के संग निभाई है। सिक्खी केशों-श्वासों के संग निभाने वालों में शहीद भाई तारू सिंघ जी का नाम प्रमुख है।

सिक्ख योद्धाओं द्वारा दिखाई फराख़दिली ने यह बात सत्य साबित की है कि सिक्खों को अपना धर्म जान से भी अधिक प्यारा है। अठारहवीं सदी में सिक्खों के लिए सबसे कठिन और भयंकर समय था, मगर सिक्खों ने अपनी जान की परवाह किए बगैर सिक्ख पहचान को आँच नहीं आने दी। इस भयंकर दौर की शुरूआत बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद हो गई थी। संख्या में छोटे (कम) परन्तु बहादुरी में बड़े कारनामे करने वाले सिक्खों की कार्यवाहियों ने लगभग आधी सदी तक दुश्मन ताकतों को मुसीबत में डाले रखा था। आखिर सिक्खों ने ही विजय प्राप्त की। इस विजय में निष्ठित सिंघों की शहादत की अहम भूमिका है। ''न मुग़ल हुकूमत ने बाग़ी सिक्खों को यातनाएं देने और उन्हें मूलत: ख़त्म करने में कोई कसर बाकी छोड़ी और न पंजाब के सपूतों (सिक्खों) ने अपनी दृढ़ता एवं लगन में कोई कमी आने दी। इस आधी सदी (१७१६- १७६६ ई.) को निस्संदेह पंजाब में वीर परंपरा के विकास का सुनहरी समय कहा जा सकता है। इस समय अपनी स्वतंत्रता के लिए जूझने वाले योद्धाओं पर कठोर अत्याचार किए गए और हुकूमत ने अपनी तरफ से उन्हें कई बार पूर्णत: ख़त्म कर दिया, परन्तु ये निर्भय योद्धा अपने निश्चित निशाने की पूर्ति के लिए आगे ही आगे बढ़ते गए। इस समय उन्हें गाँव व शहर छोड़ कर जंगलों एवं पहाड़ों में पनाह लेनी पड़ी।'' एक समय ऐसा भी आया था जब दुश्मन ताकतों ने सिक्खों का नाम-ओ-निशान मिटाने के लिए अपना पूरा जोर लगा दिया था। सिक्ख इतिहास के इस काले दौर में सबसे तबाहकुन हालात बने ज़कारिया ख़ान तथा मीर मन्नू द्वाराके पंजाब पर आक्रमण करने के दौरान।

नसलघाती के इस दौर में भी सिक्खों ने अपने गुरु पर पूर्ण भरोसा रख कर ज़ालिमों का साहस के साथ मुकाबला किया। सिक्ख पहचान के लिए यह गंभीर संकट का समय था। ''संकट का यह समय बहादुरी और कुर्बानी भरे कारनामों के साथ भरा पड़ा है। इस तरह लगता था जैसे सिक्खों पर शहादत देने का जुनून सवार हो गया हो। अपने

*प्रोफेसर इंचार्ज, गुरु गोबिंद सिंघ चेयर, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला— १४७००२, फोन : ९८१४५-९०६९९

धर्म और गुरु के लिए मरना उनकी शक्तिशाली अंतर-प्रेरणा थी। 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के अनुसार, ''सिक्खों को मरने का शौक था। अब उन्हें मृत्यु के साथ प्रेम पाने का अवसर मिला था। जिस्म पर लगे घाव आदि से उन्हें पीड़ा महसूस नहीं होती थी। उन्होंने मौत को ब्याहने के लिए ही हथियार उठाए थे। वे गाते थे--असीं शहादत नाल परनाए हां, इस नूं असीं पिट्ठ नहीं दिखाउंदे।''

ज़करिया ख़ान (१७३५ ई.) ने इस समय सिक्खों को ख़त्म करने के लिए ख़तरनाक मुहिम शुरू की हुई थी। जहाँ कहीं भी कोई सिक्ख उसकी फौज को मिलता था, उसे बेरहमी के साथ कत्ल कर दिया जाता था। सिक्खों का खुराखोज मिटाने के लिए उसने सिक्खों के सिरों के मूल्य रखना शुरू कर दिए थे। सिक्खों की सूचना देने वाले को दस और मारने वाले को पचास रुपए इनाम के तौर पर दिए जाते थे। सिक्खों के सिरों पर रखे ऐसे मूल्यों या दिए जाते इनामों के बारे में भाई रतन सिंघ (भंगू) ने 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में इस प्रकार वर्णन किया है :

दस्सण वाले नूं दस रुपए
और मारन वाला पचास।
यह लालच तुरकन दयो
तब बहुत सिंघन भयो नाश।
जोउ खेती करत थे सिंघ सु पिंडन मांहि।
ताहू को भी मारिओ केस दिसे सिर जाहि।

ज़करिया ख़ान की फ़ौज के लिए सिक्खों को पहचानना आसान था, क्योंकि फ़ौज सिक्खों को उनके केशों से पहचान लेती थी। दृढ़निश्चयी सिक्खों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए केशों को सलामत रखा हुआ था। भाई रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार जिसके भी केश दिखाई देते थे तुर्क उसे मार देते थे। ऐसे हालात में भी सिक्खों ने अपनी केशाधारी पहचान को नहीं त्यागा था और न ही उनका विश्वास डगमगाया था। सिक्खों ने अपनी जान बचाने के लिए लक्खी के जंगलों में जाकर शरण ली थी। वे मुसीबत की इन घड़ियों में घोड़ों की काठियों पर रहे और रूखा-सूखा खाकर गुज़ारा करते थे। घर से दूर जंगलों, पहाड़ों एवं रेगिस्तान में रहते हुए सिक्खों के मन में अपनी रूहानियत और सिक्ख पहचान के केंद्र श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब के दर्शन के लिए आकर्षण बना रहता था। वे देर-सवेर इस पवित्र स्थान पर आने के लिए मौका पा लेते थे। ''यह वो समय था, जब उन्होंने अपनी खाने-पीने की चीजों के अनोखे और व्यंग्यात्मक नाम रख लिए। वे भूखे रहने को 'कड़ाके' या 'काजे होना', भोजन ख़त्म होने को 'लंगर मस्त है', भुने हुए चनों को 'बादाम', साग को 'सबज़ पुला' और गाजर को 'सेब' या 'गबिंदियां' कह कर व समझ कर प्रसन्न होते थे। वे सभी मुसीबतों को सहर्ष बर्दाश्त करते रहे और उन्होंने कभी दिल न छोड़ा। ज्यादा हैरान करने वाली बात यह थी कि वे कठिनाइयों में भी बढ़े-फूले। जितनी बड़ी मुसीबतें और मुश्किलें आईं उतने ही बड़े जोश और हिम्मत के साथ उन्होंने उनका सामना किया।'' ऐसे हालत में सिक्खों के शौर्य की अनेक मिसालें इतिहास ने संभाली हुई हैं। यहाँ पर हम कुछ चुनिन्दा मिसालें पेश कर रहे हैं जो स्पष्ट रूप

से सिक्ख पहचान की शान बढ़ाती हैं।

ज़करिया ख़ान के जुल्मों के इस दौर में बाबा गरजा सिंघ और बाबा बोता सिंघ के कानों में किसी राहगीर की आवाज़ पड़ी कि अब सिक्ख ख़त्म हो गए हैं। इस आवाज़ को सह सकना उनके लिए सिक्ख पहचान की तौहीन थी। इस बात से उन्होंने दुनिया को यह बताने की ठान ली कि सिक्ख इस दुनिया में अभी जिंदा हैं। वे दिल्ली–लाहौर मुख्य मार्ग पर हाथों में डंडे लेकर खड़े हो गए और राहगीरों से टैक्स वसूल करने लगे। इस टैक्स वसूली से उनका मकसद पैसे इकठ्ठा करना नहीं था। उनके इस कदम ने यह साबित कर दिया कि अकेला सिक्ख भी अपनी बादशाही का वारिस हो सकता है। उनकी इस जुर्रत का उद्देश्य हुकूमत को चुनौती देना था। राहगीर चुपचाप टैक्स देने लगे। किसी ने भी विरोध न किया। उन्होंने सरकार तक अपना संदेश पहुंचाने के लिए एक चिट्ठी लिखी, जिसके बारे में भाई रतन सिंघ (भंगू) ने इस प्रकार बयान किया है :

चिट्ठी लिखै यौं सिंघ बोता।
हत्थ है सोटा, विच राह खड़ोता।
आना लाया गड्डे नूँ, पैसा लाया खोता।
आख भाब खानो नूँ, यौं आखै सिंघ बौता।।

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

ज़करिया ख़ान को जब इस बात का पता चला तो उसने तुरंत अपनी फ़ौज भेजी। उसके फौजियों को यह भ्रम था कि सिक्ख उन्हें देख कर भाग जाएंगे, परन्तु फौजियों को देखते ही वे दोनों मैदान में डट गए और उन्होंने फ़ौज को लड़ने के लिए ललकारा। भाई रतन सिंघ (भंगू) के 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के अनुसार, तुर्कों की फ़ौज ने बाबा गरजा सिंघ और बाबा बोता सिंघ को सलाह दी कि नवाब के साथ बातचीत के बाद उनकी जान बख्शी जा सकती है। सिंघों ने इस पेशकश का जवाब देते हुए कहा कि कौन कहता है कि हम अपनी जान बचाना चाहते हैं? हम खुद लड़ना चाहते हैं। वे दोनों बहादुरी के साथ लड़े और शहादत प्राप्त की। उनकी शहादत आज भी सिक्खों के लिए मिसाल बनी हुई है और आज भी सिक्ख उनकी शहादत पर फख्र करते हैं।

इस समय सिक्खों पर चाहे नवाब ने बहुत दबाव बनाया हुआ था, परन्तु फिर भी सिक्ख उसकी फौज पर हमला करते रहते थे। सिक्खों द्वारा किये जाते हमले उसे और भी क्रोधित कर देते थे, इसलिए वो खूँखार होता जा रहा था। उसने अपनी फ़ौज को हुक्म दिया था कि जहाँ भी कोई सिक्ख मिले उसे कत्ल कर दिया जाये। इस फरमान को लागू करने के लिए उसके फ़ौजी शिकारियों की भांति सिक्खों का पीछा कर रहे थे। फ़ौज ने सिक्खों का सफाया करने के लिए ऐसे गाँवों को जला कर राख कर दिया था जिसमें कोई सिक्ख रहता था। इसके बावजूद भी सिक्खों ने हार नहीं मानी और वे मौका पाकर फ़ौज पर हमला करने की ताक में रहते थे। दूसरी तरफ़ सिक्खों की सूचना पाने के लिए नवाब की फ़ौज ने (गुप्तचर) पाले हुए थे, जिन्हें अच्छी भेंट देकर नवाजा जाता था। जैसे फूलों के संग प्रायः काँटे भी होते हैं उसी प्रकार बहादुर कौमों में गद्दार भी होते हैं। पंजाब में उस समय गद्दारों की कोई कमी नहीं थी। जंडियाला निवासी हरभगत निरंजनिया

नवाब का खास गुप्तचर था, जो सिक्खों के बारे में हर प्रकार की जानकारी देता रहता था। सिक्खों के हमलों से तंग आए नवाब ने जंडियाला के इस हरभगत निरंजनीए को सिक्खों के बारे में पूछा, जिसका वर्णन भाई रतन सिंघ (भंगू) ने किया हैं :

गुरुद्वारे जो चढ़त चड़ावै,
सो भी मैं ने दए हटावे।
नहिं गुरूअन को देइ निआज़,
हटाइ दई मैं सिंघन काज।।५।।
ओए भुक्खै किम नांहि मराहीं,
दाणा पाणी जिन लब्भै नाहीं।
फ़ौज टोले उन बन्ह के राहीं,
खोज टोल कै मारैं ताहीं।।६।।
जिन पिंडन मैं सिंघ को भयो,
सोई पिंड उजाड़ मैं दयो।
छोड गए वै आपणे देश,
भूखे होइ वटावैं भेस।।७।।
मैं सिंघन के साक भी गारे,
खड्डन मैं ते टोल कड्ढ मारे।
मुग़ल बाज हैं सिंघ बटेरे,
मारे मुगलन ने बहु घेरे।।८।।
रिज़क बिना कोई जीवै नाहीं,
ओइ किम जीवैं रिज़क बिनांही ?
पत्त साग खाए मनुख कब जीवै,
जो जीवै, तुरन जोग किम थीवै।।९।।

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

हरभगत निरंजनीए ने बताया कि सिक्ख एक-दूसरे की बहुत मदद करते हैं। गाँवों और शहरों में निवास करते सिक्ख अपने योद्धाओं को धन और अनाज पहुँचाते हैं। उसने नवाब को बताया कि अभी भी ऐसे अनेक सिक्ख हैं जो खुद परेशानी झेल कर सिंघों की मदद करते हैं। वे खुद भूख-प्यास सहन करते हैं, परन्तु वे सिंघों का दुख नहीं सह सकते। अपने खाने में से खाना वे सिंघों को पहुँचाते हैं। वे खुद कड़ी मेहनत से कमाते हैं, जिसमें से बचा कर वे घर से बेघर हुए सिक्खों को इस कमाई में से हिस्सा अवश्य पहुँचाते हैं। उसने बताया कि इसी प्रकार का एक सिक्ख 'पूहला' नामक गाँव में 'तारू सिंघ' रहता है। वो खेती करता है और हमारा टैक्स भी देता है। वह खुद कम खाकर, जो कुछ बचता है वह सिंघों के पास पहुँचा देता है। उसकी माँ और बहन लोगों का अनाज पीस कर गुज़ारा करती हैं और रूखी-मिस्सी खाकर दिन गुजारती हैं। जो कुछ बचता है वो सिंघों की मदद के लिए पहुंचाती हैं। वे अपने गुरु के शब्दों का गान करते हैं और गंगा-यमुना के निकट नहीं जाते। वे अपने गुरु के सरोवर में स्नान करते हैं।

'श्री गुर पंथ प्रकाश' के अनुसार हरभगत निरंजनीए की बतायी इस बात को सुनते ही नवाब ने भाई तारू सिंघ जी को गिरफ़्तार करने के लिए सिपाही भेजे, जो उसे गिरफ़्तार कर लाहौर ले गए। भाई तारू सिंघ जी के धैर्य को परखने के लिए पहले उन्हें अनेक तरह की यातनाएं एवं भय दिए गए। जब यातनाएं और भय असफल सिद्ध हुए तो भाई साहिब को अनेक प्रकार के लालच देने की भी कोशिश की गई। नवाब ने कहा कि अगर वह इसलाम धर्म में आ जाये तो उसकी हर माँग पूरी कर दी जायेगी। वह मुँह माँगा धन और ज़मीन ले ले। ये लालच भी जब काम न आए तो उन्हें एक

और पेशकश की गई :

औ मुग़ल पठाणन बेटी लेहु,
बीच हवेलन बास करेहु।
तब सिंघ जी ने बचन उचारो,
सो देहु हम जो लगै प्यारो।।१०।।
तूं जे हम पै हैं मिहरबान,
आख हमैं न होहु मुसलमान।
तूं दस्स हमैं कछु ऐसे राहु,
'केसी सासीं होइ निबाहु'।
तब नवाब बहु गुस्सा खाया,
मुख ते खोटा बचन सुनाया।
जूतन साथ करों बाल दूर,
नाईअन कहयो, सिर मुन्नहु ज़रूर।।१२।।

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

भाई तारू सिंघ जी ने नवाब के लालच को ठुकराते हुए शूरवीरों की तरह जवाब दिया कि ''वे मुसलमान बनने की अपेक्षा मौत कबूल करेंगे।'' उन्होंने नवाब से उल्टा प्रश्न किया कि ''क्या मुसलमान कभी मरता नहीं?'' यह सुन कर नवाब आग बबूला हो उठा और वो सिंघ के केशों के प्रति मंदी शब्दावली बोलने लगा। भाई तारू सिंघ जी ने कहा कि ''सिक्ख के केश तब तक सलामत रहते हैं जब तक उसमें श्वास रहते हैं।'' भाई तारू सिंघ जी का यह उत्तर सुन कर नवाब ने सिंघ के केश काटने के लिए हुक्म सुना दिया। एक तरफ़ नवाब के हुक्मों को लागू करने की तैयारी होने लगी, दूसरी तरफ़ भाई तारू सिंघ जी गुरु के समक्ष अरदास कर रहे थे कि उनकी सिक्खी केशों-श्वासों संग निभ जाये। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' के लेखक के अनुसार भाई तारू सिंघ जी की अरदास स्वीकार हुई :

तब नवाब न नाऊए लगाए,
उन के संद खुंढे हो आए।
ज़िम ज़िम नऊए फेर लगावैं,
तिम तिम उन हत्थ भैड़े पावैं।।१४।।
ज़िम ज़िम नऊअन नवाब डरावै,
तिम तिम नऊअन हत्थ कंपावैं।
कला ख़ालसे तब ऐसी कई,
नऊअन द्रिष्ट मंद तब भई।।१५।।
नवाब कहयो इन जादू चलाया,
कै नउअन कछु लत्थ दिवाया।
अब लयावो मोची दो चार,
खोपरी साथ दिहु बाल उतार।।१६।।
तब सिंघ जी बहु भली मनाई,
साथ केसन के खोपरी जाई।
तौ भी हमरो बचन रहाई,
सिखी की गुर पैज रखाई।।१७।।
'अकाल-अकाल' सिंघ जाप उचारे,
सुण नवाब मूंदे कंन सारे।
तब नवाब बहु क्रोधहि भरा,
सोऊ हुक्म उन मोचीअन करा।।१८।।
इस की खोपरी साथे बाल,
काट उतारो रंबी नाल।
तबै कसाइण वैसी करी,
कर पैनी सिर रंबी धरी ।।१९।।

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

नवाब ने जब देखा कि जल्लाद से भाई तारू सिंघ जी के केश नहीं काटे जा रहे तो उसने जल्लाद को हुक्म सुनाया कि केशों सहित भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतार दी जाये। इस फ़ैसले को सुन

कर भाई तारू सिंघ जी को बेहद ख़ुशी हुई कि इस तरह उनके केस साबत रहेंगे। उनकी कोशों-श्वासों संग सिक्खी निभाने वाली अरदास स्वीकार हुई। जल्लाद उनकी खोपड़ी उतारने लगे। इस सम्बन्ध में इतिहासकार डॉ. तेजा सिंघ और डॉ. गंडा सिंघ लिखते हैं-- ''भाई तारू सिंघ जी ने यह कष्ट बहुत बहादुरी के साथ बर्दाश्त किया। वे उस समय जपु जी साहिब का पाठ करते रहे और अकाल पुरख का नाम जपते रहे। कुछ दिनों की यातनाओं के बाद पहली जुलाई, १७४५ ई. को उन्होंने अपने श्वास त्याग दिए। उन्हें यातनाएं दिलाने वाला ज़करिया ख़ान भी उनके शहीद होने से कुछ घंटे पूर्व चल बसा था। उसे घोर कष्ट का सामना करना पड़ा था, क्योंकि उसका पेशाब आना बंद हो गया था।''

ज़करिया ख़ान की तरह उसके बाद मीर मन्नू ने भी सिक्खों का बड़ी बेरहमी के साथ पीछा किया। उसने भी सिक्खों को ढूँढ-ढूँढ कर ख़त्म करने के लिए पूरा जोर लगाया। उसने भी सिक्खों के सिरों के इनाम रखे हुए थे। उसके ज़ुल्मों का सामना करने के लिए भी सिक्खों को अपने घर-बार त्यागने पड़े थे। ''सिक्खों के घरों को पुरुषों से विहीन देख कर मीर मोमन के नेतृत्व में मुग़ल फौज सिक्ख स्त्रियों को पकड़ कर मीर मन्नू के पेश किया करती थी। वह उन्हें यातनाएं देकर अपना धर्म बदलने के लिए विवश करता, परन्तु वे स्त्रियां हर प्रकार के ज़ुल्म बर्दाश्त करतीं। उनके बच्चों को उनकी आँखों के सामने ही टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाता था। उन स्त्रियों में से किसी एक ने भी उसकी अधीनता स्वीकार न की। इस घटना का वर्णन आज तक सिक्खों की अरदास में हर रोज़ किया जाता है।

''भाई तारू सिंघ जी का जीवन और उनकी शहादत सिक्ख स्मृति का अहम भाग है, जिससे सिक्ख हमेशा प्रेरणा लेते रहेंगे। उन्होंने सिक्खी जज़्बे को बनाए रखने में कीमती योगदान दिया है। ज़ुल्मी हुकूमत और उसकी ताकत व ज़बरदस्ती के आगे झुकने की जगह शहीद भाई तारू सिंघ जी ने अपने धर्म की आन और शान बचा कर रखी है।

अक्तूबर, २०२० ई. में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा शहीद भाई तारू सिंघ जी की तीसरी जन्म शताब्दी मनायी गई है, जो कि संस्था का सराहनीय प्रयास है।

सहायक सामग्री :

१. गुज़रांवालिया, ज्ञानी लाल सिंघ (१९८८), पंजाब दी वीर परंपरा, आदि काल से आधुनिक काल तक, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पृष्ठ ९४- ९५.

२. हरबंस सिंघ (१९९७), साडा विरसा, नवयुग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ ११४.

३. गुज़रांवालिया, ज्ञानी लाल सिंघ, उपरोक्त, पृष्ठ ९५.

४. तेजा सिंघ प्रिंसिपल और डॉ. गंडा सिंघ (२००३), सिक्ख इतिहास, १४६९- १७६५, अनु. भगत सिंघ, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ १२५.

५. उक्त, पृष्ठ १४३.

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णित न्याय-व्यवस्था : 'हलेमी राज' की अवधारणा

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

सामाजिक व्यवस्था का नियम एवं कानून के अनुसार संचालन ही न्याय-व्यवस्था कहलाता है। चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो, चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक या सांस्कृतिक क्षेत्र हो, प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित गतिविधियाँ तभी ठीक से चल सकती हैं जब वे नियम-कानून के अनुसार संचालित की जाएँ। कानून न केवल संबंधित क्षेत्र विशेष में मनुष्य के कर्त्तव्यों का निर्धारण करते हैं, बल्कि वे मनुष्य के अधिकारों को भी रेखांकित करते हैं। दरअसल, एक आदमी का कर्त्तव्य दूसरे के लिए उसका अधिकार बन जाता है। क़ायदे-क़ानून एक ओर तो मनुष्य के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि कर्त्तव्यों को चिन्हित करते हैं, तो वहीं दूसरी ओर उसके राजनीतिक अधिकारों, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों का स्वरूप भी निर्धारित करते हैं। जहां राज्य-प्रशासन कानून के अनुसार नहीं चलता, वहां अराजकता फैल जाती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी मनुष्य के अधिकारों तथा न्याय के बारे में बहुत स्पष्ट और गहरी जागरूकता मिलती है। गुरबाणी में अकाल पुरख को सर्वोच्च न्यायाधीश कहा गया है जो बिना किसी पूर्वाग्रह के झूठ और सच के बीच उचित अंतर करता है। गुरु साहिबान सच्चा न्याय प्राप्त करने के मनुष्य के मूल अधिकार को स्वीकार करते हैं। गुरबाणी में 'हलेमी राज' (हलीमी राज; व्रिनम्र एवं सहिष्णु शासन) की अवधारणा के माध्यम से सच्चे न्याय पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना की बात की गई है। गुरबाणी के अनुसार 'हलेमी राज' एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें कोई भी इंसान दूसरे इंसान के अधिकारों का अनादर नहीं करता। सभी सत्य का आश्रय लेते हैं और एक-दूसरे के प्रति प्रेम रखकर सुखपूर्वक रहते हैं।

अकाल पुरख : सर्वोच्च न्यायकर्ता के रूप में : अकाल पुरख को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सबसे महान और सबसे बड़ा न्यायकर्ता माना गया है। अकाल पुरख द्वारा किया गया न्याय ही 'सच्चा न्याय' कहलाता है, इसीलिए गुरबाणी में अकाल पुरख को 'अदली' यानी न्याय करने वाला या 'मुंसिफ' यानी लोगों को इंसाफ दिलाने वाला कहा गया है। गुरु साहिबान के अनुसार, अकाल पुरख के पास सर्वोच्च न्यायिक शक्तियाँ और सर्वोच्च न्यायिक विवेक है, इसलिए वह सदैव सच्चा और उत्तम न्याय करता है। वस्तुत: गुरबाणी अकाल पुरख को सृष्टि का सर्वोच्च प्रशासक स्वीकार करती है। यह न्यायशीलता अकाल पुरख की अनंत शक्तियों में से एक है। यह न केवल इस विचार को पुष्ट करता है कि अकाल पुरख सर्वोच्च शक्ति है, बल्कि यह अवधारणा भी स्पष्ट करता है

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

कि एक सच्चे नैतिक प्रशासक में क्या-क्या गुण और विशेषताएं होनी चाहिए। गुरु साहिबान का यह आशय है कि सांसारिक न्याय-निर्माताओं को अकाल पुरख के न्याय और निष्पक्षता के गुणों से प्रेरणा लेकर उनका अनुकरण करना चाहिए।

गुरबाणी में अकाल पुरख की विशिष्टता की ओर संकेत करते हुए कहा गया है कि अकाल पुरख निर्मल, अगम, अपार है और वह दुनिया को बिना तराजू के तौलता है :

मेरा प्रभु निरमलु अगम अपारा।।
बिनु तकड़ी तोलै संसारा।। *(पन्ना ११०)*

अकाल पुरख सदैव पूरा न्याय करता है :

पूरा निआउ करे करतारु।। *(पन्ना ११९)*

अकाल पुरख स्वयं सच्चा है, उसका स्थान सच्चा है और वह सदा सच्चा न्याय करता है:

सचा आपि तखतु सचा
बहि सचा करे निआउ।। *(पन्ना ९४९)*

सच्चे दरबार वाला अकाल पुरख एक-एक कर्म पर विचार करके सच्चा न्याय करता है :

करमी करमी होइ वीचारु।।
सचा आपि सचा दरबारु।। *(पन्ना ७)*

अकाल पुरख जब सच्चा न्याय करता है तब उसके सामने मालिक-सेवक, छोटे-बड़े सब बराबर होते हैं। वह अंतर्यामी बिना बताये सारी सच्चाई जान जाता है :

तह साच निआइ निबेरा।।
ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा।।
अंतरजामी जानै।।
बिनु बोलत आपि पछानै।। *(पन्ना ६२१)*

अकाल पुरख का न्याय ऐसा है कि उसमें हमेशा सच्चे की जीत होती है और पापी हमेशा हारता है :

हरि आपि बहि करे निआउ
कूड़िआर सभ मारि कढोइ।।
सचिआरा देइ वडिआई
हरि धरम निआउ कीओइ।। *(पन्ना ८९)*

इस प्रकार अकाल पुरख सम्पूर्ण विश्व को तौलता है और प्रत्येक कार्य पर विचार करके सच्चा एवं पूर्ण निर्णय करता है। वह पक्षपात नहीं करता। उसके न्यायालय में सभी बराबर हैं। उसका न्याय ऐसा है कि सच्चा सदैव जीतता है और पापी सदैव हारता है।

दरअसल, गुरु साहिबान यह समझाना चाहते हैं कि धरती पर भी इसी तरह के न्याय की आवश्यकता है। राजा या शासक को पृथ्वी पर सर्वोच्च सत्ता का अधिकारी माना गया है, इसलिए गुरु साहिबान का आशय है कि राजा या शासक अकाल पुरख की तरह विचार और विवेक से, ऊंच-नीच का भेद भुलाकर, निष्पक्ष होकर, सत्य-असत्य का निर्णय करके न्याय करे, तभी वह एक सुदृढ़ न्याय-व्यवस्था लागू कर सकेगा, जिसमें प्रत्येक मनुष्य के सभी प्रकार के अधिकारों की पूर्ण सुरक्षा की जा सकेगी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'न्याय-प्राप्ति' को मूल मानवाधिकार के रूप में स्वीकार किया गया है। गुरबाणी के अनुसार हर इंसान को बिना किसी भेदभाव, ऊंच-नीच और पक्षपात के न्याय पाने का अधिकार है। लेकिन गुरबाणी यह भी कहती है कि यह अधिकार केवल सच्चे को ही प्राप्त है, इसलिए तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी

गुरमुखों को समझाते हैं कि उन्हें बिना किसी डर के सच्चे मार्ग पर चलना चाहिए और सच्चा धन कमाना चाहिए, क्योंकि सच्चे सिंहासन पर बैठे सच्चे न्यायाधीश को सत्य के पक्ष में ही निर्णय देना होता है :

सचै तखति बैठा निआउ करि
सतसंगति मेलि मिलाई।। *(पन्ना १०८७)*

गुरबाणी का मानना है कि निष्पक्ष न्याय ही सच्चा न्याय है और यह बिना किसी भेदभाव के प्राप्त होना चाहिए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार सर्वोच्च न्यायाधीश अकाल पुरख सदैव निष्पक्ष होकर न्याय करता है। अकाल पुरख के सामने हर इंसान को उसके किये का फल मिलता है :

भाई वेखहु निआउ सचु करते का
जेहा कोई करे तेहा कोई पाए।। *(पन्ना ३०८)*

इसीलिए गुरबाणी में न्यायाधीश के खोटे-खरे को पहचानने के गुण पर विशेष बल दिया गया है। गुरु साहिबान फरमाते हैं कि सबसे बड़ा न्यायाधीश स्वयं अकाल पुरख है, जिसे इंसान के सही और गलत का पता होता है :

खोटे खरे सभि परखीअनि तितु
सचे कै दरबारा राम।। *(पन्ना ५७०)*

अकाल पुरख की दरगाह में इंसान के हर कर्म पर विचार होता है, इसीलिए उसे वही फल मिलता है जैसा वह कर्म करता है।

इस प्रकार, गुरबाणी न्याय-प्रणाली में सत्य और असत्य की सही पहचान करना बहुत महत्वपूर्ण माना गया है, ताकि सच्चे इंसान के कानूनी अधिकारों की अवहेलना न हो। अकाल पुरख का अनोखा गुण यह हैं कि वह अंतर्यामी हैं और मनुष्य के खोटे-खरे को पहचानता है, इसलिए गुरबाणी प्रत्येक न्यायकर्ता में इस गुण का होना अनिवार्य मानती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में न्याय-व्यवस्था की स्थापना की जिम्मेदारी राज्य-तंत्र पर डाली गई है। स्पष्ट कर दिया गया है कि राज्य को एक उपयुक्त वातावरण का निर्माण करना चाहिए, जिसमें प्रत्येक मनुष्य जीवन जी सके, जिसमें उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि अधिकार प्राप्त हों। राज्य एक ऐसे वातावरण का निर्माण करे जहां रहकर मनुष्य को अपने सभी मानवाधिकारों के प्रयोग की स्वतंत्रता मिले।

दरअसल श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अकाल पुरख के सच्चे न्याय के माध्यम से मनुष्य के संपूर्ण मानवाधिकारों को पूरा करने की इच्छा को दर्शाया गया है।

न्याय-आधारित राज्य 'हलेमी राज' की अवधारणा : मानव जीवन का सुचारू संचालन तभी कायम रह सकता है जब राज्य-सत्ता पर्याप्त जीवन-यापन की व्यवस्था उपलब्ध कराये। इन व्यवस्थाओं में न्याय-व्यवस्था सबसे महत्वपूर्ण है। न्याय-व्यवस्था अच्छी होने पर ही मनुष्य के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा हो सकती है। अतः मानवाधिकारों के फलने-फूलने के लिए एक न्यायपूर्ण राज्य-व्यवस्था आवश्यक है।

गुरबाणी न्यायिक व्यवस्था के खुलेपन का समर्थन करती है। इस संदर्भ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'हलेमी राज' की अवधारणा स्थापित की गई है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी

'हलेमी राज' की संरचना और व्यवस्था के बारे में फरमाते हैं :

हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा।।
पै कोइ न किसै रजाणदा।।
सभ सुखाली वुठीआ
इहु होआ हलेमी राजु जीउ।। *(पन्ना ७४)*

पंचम पातशाह फरमाते हैं कि 'हलेमी राज' वह राज्य है जिसमें कोई किसी को चोट नहीं पहुँचाता और सभी लोग शांति से रहते हैं, कोई किसी को कष्ट नहीं पहुँचाता अर्थात् कोई किसी के अधिकारों का हनन नहीं करता, कोई किसी के साथ अन्याय नहीं करता। सभी लोग अपने मानवाधिकारों का आनंद लेते हुए अपना जीवन जीते हैं। गुरबाणी के अनुसार, सबसे अच्छी राजनीति वह है जिसमें न्याय का वास है, अन्याय का नामोनिशान भी नहीं है।

गुरु साहिबान ने 'हलेमी राज' की स्थापना की जिम्मेदारी राजा वर्ग को सौंपी है। राजा वर्ग को समझाते हुए उपदेश दिया गया है कि उन्हें न्याय करने का व्रत लेना चाहिए और निर्णय 'सत्य' पर आधारित होना चाहिए :

राजे चुली निआव की
पड़िआ सचु धिआनु।। *(पन्ना १२४०)*

राजाओं-प्रशासकों से कहा गया है कि वे इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अकाल पुरख का अनुकरण करें, क्योंकि वह सबसे महान राजा है और उसका न्याय सत्य है :

तिसु बिनु अवरु न कोई राजा
करि तपावसु बणत बणाई।।१६।।
निआउ तिसै का है सद साचा
विरले हुकमु मनाई।। *(पन्ना ९१२)*

गुरु साहिबान ने ऐसे राजा के बारे में कहा है, जो उपर्युक्त प्रकार से न्यायपूर्ण राज्य-व्यवस्था स्थापित करता है, जो सच्चे सिंहासन से सच्चा न्याय करता है, उसका शासन लम्बे समय तक चलता है और वह निष्कंटक राज्य का आनंद लेता है :

निहकंटक राजु भुंचि तू
गुरमुखि सचु कमाई।।
सचै तखति बैठा निआउ करि
सतसंगति मेलि मिलाई।। *(पन्ना १०८७)*

इस प्रकार गुरबाणी में मनुष्य के न्यायिक अधिकारों के बारे में बहुत स्पष्ट विचार हैं। गुरु साहिबान सच्चा न्याय पाने के मनुष्य के मूल अधिकार को स्वीकार करते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अकाल पुरख को सर्वोच्च एवं निष्पक्ष न्यायाधीश के रूप में दर्शाया गया है तथा राजा वर्ग को अकाल पुरख से प्रेरणा लेकर सच्चे न्यायाधीश के रूप में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'हलेमी राज' की अवधारणा के माध्यम से न्याय पर आधारित सच्ची सामाजिक व्यवस्था प्रस्तुत की गई है। गुरबाणी के अनुसार 'हलेमी राज' एक सामाजिक व्यवस्था है जिसमें कोई भी इंसान दूसरे इंसान के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करता है। सभी सत्य का आश्रय लेते हैं, प्रेमपूर्वक, सुखपूर्वक रहते हैं तथा सभी के अधिकारों का पूरा सम्मान करते हैं। दूसरों के अधिकारों का सम्मान ही वास्तव में न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करता है।

सरदार ऊधम सिंघ शहीद

*-डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

ऐसे बहुत-से शूरवीर, योद्धा, जांबाज़, स्वाभिमानी सिक्ख इतिहास के आकाश में सितारों की तरह चमक रहे हैं, जिन्होंने देश, धर्म व कौम की आन, बान, शान और स्वाभिमान की रक्षा हेतु कुर्बानीयां दी है, विदेशी आक्रमणकारियों का डटकर, अदम्य साहस के साथ मुकाबला किया है तथा उन्हें नाकों चने चबवाए हैं। भारत की गुलामी के दौरान बहुत-से ऐसे भीरू, डरपोक, स्वार्थी भारतीय हुए हैं, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता हेतु कोई आंदोलन या संघर्ष नहीं किया, बल्कि विदेशी शासकों की चापलूसी करके अपनी चमड़ी व दमड़ी बचाते रहे। बहादुर, साहसी, स्वाभिमानी तो पंजाबी व सिक्ख ही हुए हैं, जिन्होंने देश की गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ने में सबसे अधिक योगदान दिया है। सरदार करतार सिंघ सराभा, शहीदे-आज़म सरदार भगत सिंघ और सरदार ऊधम सिंघ शहीद के योगदान को कौन भुला सकता है!

सरदार ऊधम सिंघ शहीद वो बहादुर, स्वाभिमानी और देशभक्त क्रांतिकारी था, जिसने लंदन जाकर जलियां वाला बाग के खूनी साके के अपराधी माईकल ओडवायर को यमलोक पहुंचा दिया था तथा यह सिद्ध कर दिखाया था कि इस स्वाभिमानी कौम के नौजवान, दरिंदों एवं जालिमों को कड़ा सबक सिखाना जानते हैं, जुल्म व अन्याय का मुंहतोड़ जवाब देना जानते हैं। सरदार ऊधम सिंघ शहीद बब्बर अकालियों का साथी था तथा वह गदर लहर से भी प्रभावित था।

सरदार ऊधम सिंघ का जन्म २६ दिसंबर, सन् १८९९ ई. को सुनाम में माता हरनाम कौर (नरैणी) तथा पिता सरदार टहल सिंघ (चूहड़राम) के गृह में हुआ था।

७-८ वर्ष की आयु में पहले माता का और बाद में पिता का देहांत हो गया। उनके एक रिश्तेदार द्वारा २४ अक्तूबर, १९०७ ई. को उसे एवं उसके बड़े भाई साधू सिंघ को सेंट्रल खालसा यतीमखाना श्री अमृतसर साहिब में दाखिल करवा दिया गया। इस यतीमखाना में बच्चों को शिक्षा देने के साथ-साथ खेलों में भी भाग लेने दिया जाता था। सरदार ऊधम सिंघ अच्छी डील-डौल वाला (हृष्ट-पुष्ट), मेहनती और धीर-गंभीर होने के कारण अपने समूह के बच्चों का अगुआ बन गया। वह प्रायः कहा करता था कि उसने विधिवत शिक्षा ग्रहण नहीं की थी, फिर भी वह गुरमुखी, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा में निपुण था। यतीमखाना में रहते हुए उसने सिक्ख इतिहास में हुई अनेक लासानी कुर्बानियों का ज्ञान प्राप्त किया और इनसे प्रेरित हुआ। सन् १९१७ में उसके बड़े भाई साधू सिंघ की निमोनिया के कारण मृत्यु हो गई। इससे उसे गहरा सदमा पहुंचा। वह कई दिनों तक गमगीन व उदास रहा।

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

वह श्री अमृतसर साहिब में हुए जलियां वाला बाग खूनी साके से बहुत दुखी एवं आहत था। उसने लोगों से श्री अमृतसर साहिब, लाहौर, गुजरांवाला, लायलपुर तथा गुजरात के शहरों और सैकड़ों गांव में लगे मार्शल लॉ के दौरान निर्दोष व निहत्थे भारतीयों पर ढहाए गए अत्याचारों की, कत्लोगारत की, फिरंगी सरकार के क्रूर दमन की दास्तान सुनी। उसने जलियांवाला बाग की मिट्टी को हाथ में लेकर प्रण किया कि वह इस खूनी साके के जिम्मेदार माईकल ओडवायर से बदला अवश्य लेगा। उसके सीने में क्रांति की आग छछकने लगी थी।

दिसंबर, १९१९ ई. में वह इंडियन नेशनल कांग्रेस के श्री अमृतसर साहिब में हुए सेशन में बतौर वालंटियर शामिल हुआ। इस पार्टी की विचारधारा व कार्यशाली से सरदार ऊधम सिंघ निराश हो उठा। इससे उसने नाता तोड़ लिया। वह बब्बर अकालियों तथा गदर लहर के कर्मियों से काफी प्रभावित हुआ।

देश-प्रेमी बब्बरों से वह मिलना चाहता था। कई दिनों की कोशिश के बाद मालवा क्षेत्र के बब्बर अकाली बाबू संता सिंघ के साथ उसकी भेंट हुई। उनकी प्रेरणा से उसने मालवा क्षेत्र में बब्बर अकाली लहर का प्रचार करना शुरू कर दिया। थोड़े समय में ही इस लहर के साथ कई अन्य साथी भी जुड़ गए। जत्थे के प्रमुख सरदार ऊधम सिंघ एवं चौधरी शेर जंग मिलकर काम करने लगे। सरदार ऊधम सिंघ ने शहीद-ए-आज़म सरदार भगत सिंघ के साथ सम्पर्क स्थापित किया। उसने सरदार भगत सिंघ द्वारा स्थापित 'भारत नौजवान सभा' में भी काम किया।

सरदार ऊधम सिंघ गदर साहित्य की प्राप्ति हेतु और मास्टर मोता सिंघ से भेंट करने हेतु गांव पतारा (जिला जलंधर) पहुंचा, परंतु क्रांतिकारियों की चल रही धरपकड़ मुहिम के कारण कोई सूत्र उसके हाथ न लग सका। कुछ माह उपरांत वह पुनः पूरबी अफ्रीका चला गया। वहां दो वर्ष तक उसने युगांडा रेलवे वर्कशाप में बतौर मैकेनिक काम किया। फिर भारत लौट आया। सन् १९२२ में वह प्रीतम सिंघ के साथ लंदन, वहां से मैक्सिको भी गया। दो साल कैलेफोर्निया में भी काम किया। यहीं पर वह गदर पार्टी का सदस्य बना और पार्टी की गतिविधियों में भाग लेने लगा। सन् १९२३ में सैफउद्दीन किचलू की मार्फत उसकी भेंट काबुल में मास्टर मोता सिंघ के साथ संभव हो पाई।

सरदार ऊधम सिंघ सच्चा देश-भक्त व धर्म-निरपेक्ष था। भारत लौटने पर उसने श्री अमृतसर साहिब में एक दुकान ली और उसके माथे पर लिखवाया-- 'राम मुहम्मद सिंघ आजाद'। यह दुकान काफी समय तक क्रांतिकारियों के तालमेल का केंद्र बनी रही। यहीं पर उसकी मुलाकात सरदार भगत सिंघ के साथ हुई। अगस्त, १९२७ ई. में सरदार ऊधम सिंघ अंग्रेजी वेष में हथियारों सहित कटड़ा शेर सिंघ (श्री अमृतसर साहिब) में पकड़ लिया गया और उस पर मुकद्दमा चलाया गया। सन् १९२८ में उसे ४ वर्ष कैद की सज़ा सुना दी गई। कैद के दौरान अत्याचारी व अन्यायी अंग्रेज़ सरकार ने २३ मार्च, १९३१ ई. को सरदार भगत सिंघ, राजगुरु और सुखदेव को फांसी पर लटका दिया। इस दर्दनाक घटना से सरदार ऊधम सिंघ बहुत उदास हुआ। वह

२३ मार्च, १९३१ ई. को अपनी रिहाई के बाद सीधा हुसैनीवाला पहुंचा तथा बाद में अपने पैतृक गांव सुनाम गया।

जून, १९३२ ई. में वह साधु के वेश में जम्मू से श्रीनगर पैदल चलकर पहुंचा। २० मार्च, १९३३ ई. को वह लाहौर से ऊधम सिंघ नाम पर नया पासपोर्ट प्राप्त करने में कामयाब हो गया और सन् १९३४ में वह पुनः इंग्लैड पहुंच गया। सन् १९३७ में अंग्रेजों के खुफिया तंत्र को पता चल गया कि शेर सिंघ, उदय सिंघ, ऊधम सिंघ, राम मुहम्मद सिंघ आज़ाद एक ही आदमी के नाम हैं। सरदार ऊधम सिंघ ने अपने अंतरंग मित्रों को औपचारिक विदायगी दी और कहा, ''कल शाम लंदन में लोग एक अद्‌भुत नज़ारा देखेंगे, जो कि अंग्रेज़ साम्राज्य की नींव हिलाकर रख देगा। यह आपके प्यारे मित्र के लिए शुभ दिन होगा।''

१३ मार्च, १९४० ई. को संध्या के समय नया सूट पहन कर, सिर पर टोप धारण कर, हाथ में एक मोटी किताब पकड़कर, जिसके भीतरी पन्नों को काट उसमें पिस्टल छिपाया गया था तथा ओवरकोट पहनकर सरदार ऊधम सिंघ कैक्सटन हॉल (लंदन) पहुंचा। बैठने हेतु कुर्सियों की कमी के कारण वह वहां पर खड़े लोगों में दाईं तरफ की प्रथम पंक्ति के निकट खड़ा हो गया। माईकल ओडवायर ने मंच पर से १९१३-१९१९ ई. में भारत में अपनी भूमिका के विषय पर घमंड में चूर होकर भाषण दिया। उसे यह नहीं मालूम था कि निर्दोष व निहत्थे भारतीयों के कत्लेआम का बदला लेने के लिए एक शूरवीर, क्रांतिकारी, देशभक्त योद्धा उसे कड़ा सबक सिखाने हेतु अपनी जान हथेली पर रखे वहां मौजूद है। बैठक खत्म होते ही सरदार ऊधम सिंघ ने अपने पिस्टल से छः गोलियां दागकर अत्याचारी व घमंडी ओडवायर को मौके पर ही ढेर कर दिया। लार्ड जैटलैंड, लार्ड लमिंगटन, सर लुईस डेन घायल हो गए। वहां पर इतनी दहशत पैदा हो गई कि पुलिस मौका-ए-वारदात पर पहुंचकर भी उसे पकड़ने का साहस न जुटा सकी। सरदार ऊधम सिंघ ने ऊंची आवाज़ में कहा, ''मुझसे डरो मत! मैं अन्य किसी व्यक्ति की जान लेने का इच्छुक नहीं हूं! मैं जिस जालिम व्यक्ति को मारने हेतु अपनी मातृभूमि छोड़ लंदन आया था, मैंने उसे मारकर सबको बता दिया है कि हमारी कौम बहादुर तथा ज़ांबाज़ कौम है, स्वाभिमानी है। लीजिए, अगर अब भी मुझसे डरते हो, तो मैं हाथ में पकड़ा पिस्टल फेंक देता हूं।'' उसने पिस्टल फेंक दिया और पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। सरदार ऊधम सिंघ का अदम्य साहस, बहादुरी औऱ हौसला देखकर अंग्रेज भी दंग रह गए।

इस लाजवाब घटना की पूरे विश्व में चर्चा हुई। भारत में एक सौ अंग्रेज़ मरने की इतनी चर्चा नहीं होती थी, जितनी एक ओडवायर के लंदन में मारे जाने पर हुई। उस समय ब्रिटेन का अनेक देशों में शासन था और कई देशों की राष्ट्रवादी जत्थेबंदियां उनका शासन समाप्त करने के लिए अपने-अपने ढंग से संघर्ष कर रही थीं। अंग्रेज़ सरकार घबराने लगी कि यदि सरदार ऊधम सिंघ के पदचिन्हों पर अन्य बस्तियों के लोग भी चल पड़े, तो उसका साम्राज्य समाप्त हो जाएगा तथा हर जगह अंग्रेज प्रमुखों का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। ब्रिटिश

हुकूमत इस बात से डर गई थी कि सरदार ऊधम सिंघ की इस कार्यवाही का असर भारतीय युवकों पर पड़ सकता है। ऐसे में किसी भी अंग्रेज़ व्यक्ति का जीवन सुरक्षित नहीं रहेगा। अंग्रेज़ अधिकारियों ने जेल में सरदार ऊधम सिंघ के सामने पेशकश की (प्रस्ताव रखा) कि ''वह मुकर जाए तथा अदालत में यह बयान न दे कि उसने माईकल ओडवायर की हत्या की है और न ही इस घटना को जलियां वाला बाग खूनी साके के साथ जोड़े। अगर वह ऐसा करेगा, तो सरकारी गवाह भी मुकर जाएंगे और वह फांसी लगने से बच जाएगा।''

इस प्रस्ताव के पीछे छिपी चाल को सरदार ऊधम सिंघ समझता था। वह नहीं चाहता था कि उसका प्यारा वतन और अधिक समय तक गुलामी की जंज़ीरों में जकड़ा रहे। अत: उसने दृढ़ता व निर्भीकता के साथ कहा, ''मैंने जिस उद्देश्य के लिए कत्ल किया है, वह अवश्य पूरा होगा। यदि मैं मुकर जाता हूं तो हम भारतीयों का ब्रिटिश सरकार के खिलाफ क्रांतिकारी संघर्ष मद्धिम पड़ जाएगा। मैंने सर माईकल ओडवायर को मारकर, अंग्रेज कौम व सरकार को यह भी बताना था कि हम वतनपरस्त लोग मुर्दा नहीं हैं, जिंदा हैं। हम स्वाभिमानी हैं तथा खून का बदला खून से लेना जानते हैं। कोई भी हमारी गैरत को ललकार नहीं सकता है।''

सरदार ऊधम सिंघ के विरुद्ध मुकद्दमा चलाया गया और अदालत में उसने अति जोशीला, भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष की तस्वीर पेश करने वाला बयान दिया। ब्रिटिश सरकार उसके इस बयान से इतना घबराई कि उसने इसकी रिपोर्ट समाचार पत्रों में प्रकाशित करने की आज्ञा न दी। १३ मार्च, १९४० ई. की रात में ही सरदार ऊधम सिंघ के विरुद्ध कत्ल का केस दर्ज कर दिया गया था। पूरा एक महीना अंग्रेज़ पुलिस उसे यातनाएं देती रही, लेकिन कौम का शेर बहादुर अपने मिशन व बयान पर डटा रहा। २६ अप्रैल से ६ जून तक भूख हड़ताल के कारण उसका भार २४ पौंड कम हो गया। फिर ४-५ जून को हुई अदालती कार्यवाही के दौरान उसने अपना लिखित बयान १२-सदस्यीय ज्यूरी के समक्ष पढ़ना शुरू किया। जजों ने उसे बार-बार टोका अर्थात् रोका। किसी भी दलील, वकील, अपील को अनसुना करने वाली ब्रिटिश हुकूमत ने तो उसे फांसी पर लटकाने का निश्चय कर ही लिया था। ऐट किनसन (ज्यूरी प्रमुख) ने उसे फांसी लगाने का आदेश सुना दिया। अंत में ३१ जुलाई, १९४० ई. को सुबह ९ बजे पैनटनविल जेल में सरदार ऊधम सिंघ को फांसी पर लटा कर शहीद कर दिया गया।

देश व कौम के इस क्रांतिकारी, स्वाभिमानी, जांबाज़ सुपूत को सदैव याद रखा जाना चाहिए! उसकी कुर्बानी औऱ जज्बे को याद रखा जाना चाहिए!! सरदार ऊधम सिंघ शहीद की गौरवमयी गाथा को विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए, ताकि हमारी मौजूदा व आने वाली पीढ़ियां उसकी देशभक्ति, राष्ट्रीय भावना, क्रांतिकारी विचारधारा से प्रेरणा, ऊर्जा व आगवानी लेती रहें।

सरदार तेजा सिंघ समुंदरी : वैयक्तिक और पंथक जीवन

– डॉ. हरप्रीत कौर*

सरदार तेजा सिंघ समुंदरी एक ऐसी शख्सियत थे, जिनका समूचा जीवन गुणों से ओत-प्रोत था। वे निष्काम, अचल, अगुआ, गंभीर और शांत स्वभाव रखने वाले पंथक थे। उन्होंने बिना किसी पद की लालसा के सेवा-भावना के साथ अनेक पंथक कार्य किये। इस आलेख में सरदार तेजा सिंघ समुंदरी के वैयक्तिक और पंथक जीवन को संक्षिप्त रूप में बयान किया गया है।

सरदार तेजा सिंघ समुंदरी का जन्म १० फाल्गुन, संवत् १९३८ (२० फरवरी, १८८१ ई.) को अमृत बेला में पट्टी के निकट गाँव राय का बुर्ज में हुआ।[1] पिता स. देवा सिंघ तथा माता नंद कौर के घर जन्मे बालक का नाम बड़े ही उत्साह के साथ 'तेजा सिंघ' रखा गया। सरदार तेजा सिंघ समुंदरी सचमुच अपने नाम के अर्थों को अपने जीवन-काल के दौरान छोड़े पद-चिन्हों द्वारा रूपमान करते हैं। वे अपने माँ-बाप की इकलौती संतान थे। उनकी दो बहनें– बीबी आसो और बीबी दातो थीं।

उनके माता-पिता गुरमुखों वाला जीवन जीने वाले थे। सेवा-भावना वाले माता नंद कौर का, सरदार तेजा सिंघ की छोटी आयु में ही निधन हो गया। माँ की ममता, धर्म-माता के रूप में विधवा माई राधा, जो उनके ही गाँव चक्क नंबर १४० की रहने वाली थी, से मिली। अनेक कठिन समय में भी माई राधा की मदद के फलस्वरूप सरदार तेजा सिंघ ने भी धर्मी पुत्र का रिश्ता बाखूबी निभाया। इसी प्रकार रिश्ते में चाचा लगते बाबा किहर सिंघ को उन्होंने धर्म का पिता बनाया था।

जब उनके पिता को चक्क नंबर १४०, तहसील समुंदरी, ज़िला लायलपुर में पाँच मुरब्बे ज़मीन मिली, तो वे वहाँ चले गए। तहसील समुंदरी से ही सरदार तेजा सिंघ के नाम के साथ 'समुंदरी' तख़ल्लुस जुड़ गया। छः वर्ष की आयु में पिता जी उनको अपने साथ ही फ़ौज में ले गए। उन्होंने वहीं पर पढ़ाई शुरू की। छठी कक्षा में से पढ़ाई छोड़ने के कारण शेष पढ़ाई घर पर ही उस्ताद से प्राप्त की। उन्होंने उर्दू, पंजाबी भाषाएं सीखीं और कुछ हद तक अंग्रेज़ी भाषा भी सीखी। वे अपने पिता की भांति नित्तनेमी थे और अमृत बेला में पाठ करने के बाद ही घर का कोई कार-व्यवहार करते थे। उनको नित्तनेम की बाणिओं के अलावा सुखमनी साहिब, आसा की वार भी कंठस्थ था। बताया जाता है कि उनमें छोटी आयु में ही बड़ों वाले गुण विद्यमान थे। कठिन समय में हिम्मत न हारना, स्थिर अवस्था में रहना और खेलते समय साथियों के साथ लड़ाई न करना, उनके प्राकृतिक गुण थे। बचपन से लेकर अपने जीवन के अन्तिम समय तक उन्होंने हर जगह झगड़े आदि को समझौते के माध्यम से निपटाने की कोशिश की। उनको गतका, पोलो, नेज़ाबाज़ी, तेग और बंदूक चलाने का शौक था।

*रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ८३६०८-९३०९५

उन्होंने कभी भी अपना समय बेकार नहीं गंवाया, बल्कि इसे सार्थक बनाने के लिए सिक्ख इतिहास, धार्मिक पुस्तकों और श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ किया। सिक्ख इतिहास में से सिक्ख वीरों का जीवन उनका प्रेरणा-स्रोत बना। सरदार तेजा सिंघ बाणी केवल पढ़ते ही नहीं, बल्कि इसके अर्थों को गहराई तक समझने की कोशिश भी करते थे। वे श्री अखंड पाठ साहिब की सेवा में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे। अखबार पढ़ने में भी उनकी ख़ास रुचि थी, जिस कारण वे समकालीन समस्याओं की जानकारी प्राप्त करते रहते थे।

उनका विवाह दस वर्ष की आयु में सूबेदार सरदार जेठा सिंघ की सुपुत्री बीबी राम कौर के साथ १८९१ ई. में हुआ। दस वर्ष तक कोई औलाद न होने के कारण बहनों द्वारा ज़्यादा ज़ोर देने पर दूसरा विवाह १९०१ ई. में स. जीता सिंघ की सुपुत्री बीबी शाम कौर के साथ हुआ। वाहिगुरु की ऐसी कृपा हुई कि दूसरे विवाह के बाद सरदार तेजा सिंघ की पहली पत्नी बीबी राम कौर के घर चार पुत्रों और एक पुत्री सतवंत कौर (कुंती/कंती) ने जन्म लिया। ज्ञानी हीरा सिंघ दर्द ने दूसरी पत्नी की कोख से एक पुत्र के जन्म लेने के बारे में बताया है, जिसका नाम चरन सिंघ था, जबकि डॉ. पिआर सिंघ की जानकारी के अनुसार दूसरी पत्नी की कोख से दो पुत्रों- स. हरचरन सिंघ व स. महिंदर सिंघ का जन्म हुआ। उनके सुपुत्र स. बिशन सिंघ समुंदरी गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी के प्रथम उप-कुलपति बने।

लगभग १८ वर्ष की आयु में सरदार तेजा सिंघ के पिता ने उन्हें २२ नंबर रिसाले में (दफादार) भर्ती करवा दिया, जिसमें वे खुद भी रिसालेदार मेजर रहे थे। सरदार तेजा सिंघ कुछ ही समय में अपनी काबलियत के बल पर रंगरूटों के इंस्पेक्टर उस्ताद बन गए। उनका मिलनसार और ईमानदार स्वभाव फ़ौजी आफिसरों को पसंद नहीं था। उनको अवैध रूप से फंसाने की साजिशें अक्सर ही बनायी जातीं, परन्तु वे अपनी बुद्धिमता से हमेशा ही बच जाते थे। अंततः १९०२ ई. में कुछ कारणों से उन्होंने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। कुछ समय बाद जब उनके रिसाले का कमांडिंग आफिसर कर्नल लक्क उनके इलाके में आया तो उसने दोबारा जमांदार बना कर ले जाने की बात कही, परन्तु उन्होंने कहा कि ''मैं अब एक और ही फ़ौज में भर्ती हो गया हूं।''[२]

जब सरदार तेजा सिंघ की आयु लगभग ३० वर्ष की थी, तो उनके पिता स. देवा सिंघ का १९११-१२ ई. के लगभग देहांत हो गया। सरदार तेजा सिंघ पंथक व्यस्तताओं के कारण ज्यादातर घर से बाहर ही रहते थे, इसलिए उनके पिता जी अक्सर ही कहा करते थे- ''तेजा सिंघ! मुझे पता है, जब मैं मरा तो तू घर पर नहीं होगा।''[३] उनका कथन सत्य सिद्ध हुआ। उनके अंतिम समय सरदार तेजा सिंघ घर पर नहीं थे।

सरदार तेजा सिंघ समुंदरी जब पंथक कार्यों में जुट गए तो फिर उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। सिक्खों को अपनी अमीर विरासत के साथ जोड़ने के लिए 'सिंघ सभा लहर' चल रही थी। इसके बाद 'चीफ़ खालसा दीवान' की स्थापना हुई। इन दीवानों का मकसद लोगों को गुरसिक्खी के लिए प्रेरित करना था और विद्या के प्रसार के लिए स्कूल खोलना था। जब चीफ़ खालसा दीवान के विभिन्न

इलाकों में भी दीवान बने तो समुंदरी तथा लायलपुर गाँव में भी खालसा दीवान की आधारशिला रखी गई। सरदार तेजा सिंघ समुंदरी इन दीवानों के विख्यात सदस्यों में से थे। सरदार तेजा सिंघ ने सारी बार को जत्थेबंद करने के लिए 'खालसा दीवान बार' स्थापित किया।

उन्होंने शैक्षिक ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए स्कूल, कॉलेज खोलने में विशेष योगदान दिया। खालसा हाई स्कूल लायलपुर, चक्क नंबर ४१ में बार खालसा हाई स्कूल, चक्क नं. १४० में खालसा माध्यमिक स्कूल, गुरु गोबिंद सिंघ खालसा हाई स्कूल सरहाली भी उनकी मेहनत का निष्कर्ष था। यहाँ तक कि जेल में ही संगत को प्रेरित कर लायलपुर खालसा कॉलेज खुलवा दिया। सरदार तेजा सिंघ चक्क नं. १४० के खालसा पूर्व माध्यमिक स्कूल का सारा ख़र्च स्वयं ही उठाते थे। कई बार अध्यापकों को तीन-तीन महीने की पेशगी तनख्वाह अपने पास से दे देते थे। आप सरहाली स्कूल के मैनेजर अंतिम समय तक रहे।

१९१४ ई. में दिल्ली के गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की दीवार गिराने पर पैदा हुई आक्रोश लहर में उनका भरपूर योगदान था। दीवार गिराए जाने के विरोध में सरदार हरचंद सिंघ द्वारा आवाज़ उठाए जाने पर सरदार तेजा सिंघ समुंदरी ने इसका समर्थन किया। उन्होंने पट्टी, लाहौर, भसौड़ तथा बार में दीवान आयोजित कर सरकार का विरोध किया। सरदार तेजा सिंघ का विचार था कि सरकार को गुरुद्वारा साहिबान की दीवारें एवं यादगारें गिराने का कोई हक नहीं है। आपने गोजरा तथा अन्य स्थानों पर आयोजित सभाओं को सफल बनाने में भी योगदान दिया। जलंधर में १० से १२ अप्रैल, १९१४ ई. तक हुई सिक्ख शैक्षणिक कान्फ्रेंस में जब सरदार हरचंद सिंघ को गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की दीवार गिराए जाने की एजीटेशन से सम्बन्धित बोलने की आज्ञा न मिली तो उनका साथ देते हुए सरदार तेजा सिंघ समुंदरी आक्रोशस्वरूप पंडाल से बाहर आ गए। इन्हीं दिनों में प्रथम विश्व युद्ध शुरू होने के साथ जिलाधिकारी की तरफ से सरदार हरचंद सिंघ आदि को गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की दीवार से सम्बन्धित आंदोलन बंद करने के लिए कहा गया तो उन्होंने साथियों के साथ बातचीत करने के पश्चात् आंदोलन बंद कर दिया। सरदार तेजा सिंघ समुंदरी के गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की लहर में सक्रिय रहने का इल्म इस बात से भी होता है कि उनकी गतिविधियों पर नज़रसानी के लिए उनके गाँव चक्क १४० में पुलिस भी तैनात की गई थी। पाबंदियों की मुहताजी से ऊँची परवाज़ भरने वाले प्रतापी सिंघ अपने तेज़-तर्रार रफ़्तार वाले बोते की मदद से सरदार हरचंद सिंघ से मिल आया करते थे। विश्व-युद्ध के ख़त्म होने के बाद दीवार के पुनर्निर्माण का मुद्दा फिर उठाया गया। अकाली अख़बार के माध्यम से दीवार के पुनर्निर्माण के लिए शांतमयी ढंग से शहादत देने के लिए १०० सिंघों के जत्थे की माँग की गई। सरदार तेजा सिंघ समुंदरी ने अख़बार देखते ही शहीदी जत्थे में शामिल होने के लिए अपना नाम दे दिया। १९२० ई. में दीवार के पुनर्निर्माण के लिए जत्थे ने दिल्ली जाने का दृढ़ फ़ैसला किया।

२१ मई, १९२० ई. को 'अकाली' अख़बार

मास्टर सुंदर सिंघ लायलपुरी के प्रयत्न से शुरू हुआ।[४] समुंदरी जी केवल स्वयं ही साहित्य पढ़ने का शौक नहीं पालते रहे, बल्कि इसके प्रचार-प्रसार के लिए भी सक्रिय रहे। आप जी ने लाहौर पहुँच कर मास्टर जी से कहा कि ''अब आपने अख़बार शुरू कर ही दिया है, इसलिए घबराना नहीं। मुझसे जो भी मदद हो सकी, करूँगा और हम इस अख़बार को अच्छी तरह से चलाएँगे।''[५] उन्होंने उसी समय पाँच सौ रुपए देकर 'अकाली' अख़बार के लिए वित्तीय सहायता देनी शुरू कर दी। एक बार गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के साके से सम्बन्धित 'अकाली' अख़बार में लाहौर के कमिशनर किंग द्वारा महंत को ख़ूनी घटना के लिए शह देने वाला दिखाया गया, जिस पर कमिशनर किंग और डिप्टी इंस्पेक्टर द्वारा 'अकाली' अख़बार को ४० हज़ार रुपए का जुर्माना लगाया गया। कुछ सज्जनों ने क्षमा मांगने की सलाह दी और कुछ ने कहा कि क्षमा मांगने से पंथ की आन को नुकसान पहुँचेगा। फराख़दिल सरदार तेजा सिंघ समुंदरी ने सदस्यों को ढारस बंधाते हुए कहा कि पैसों के कारण पंथ की साख को कम करने की कदाचित ज़रूरत नहीं। उन्होंने जुर्माना भरने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। यहाँ तक कि उन्होंने इसके लिए अपनी दो मुरब्बे जमीन नीलाम करने की भी सोच ली।

गुरुद्वारों के प्रबंध को सुधारने के लिए नवंबर १९२० ई. में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में आई। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को आज़ाद कराने के लिए जो भी समितियाँ बनती रहीं उनमें भी सरदार तेजा सिंघ समुंदरी का नाम अग्रणी सदस्यों में शुमार होता था। साका गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का उन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वे सब कुछ छोड़छाड़ कर पंथक सेवा के क्षेत्र में कूद पड़े। कृषि-कार्य पुत्र को सौंपने के पश्चात् गुरुद्वारों के प्रबंध को सुचारू ढंग व मर्यादा के साथ चलाने के लिए बनाई गई उप-समिति में शामिल हो गए। सरदार तेजा सिंघ के परिवार ने पंथक सेवा में पूर्ण सहयोग दिया और आर्थिक मदद भी देते रहे। वे पंथक-कार्यों में इतना व्यस्त रहते थे कि महीनों तक परिवार के पास नहीं जा पाते थे। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के प्रबंध को सुधारने के लिए उन्होंने वहीं पर डेरे जमा लिए। सरदार तेजा सिंघ समुंदरी की चुंबकीय शख़्सियत द्वारा गुरुद्वारों का प्रबंध हासिल करने के सम्बंध में ज्ञानी हीरा सिंघ दर्द उनके वैयक्तिक गुणों का वर्णन बड़े सूक्ष्म ढंग के साथ करते हैं:-

''गुरुद्वारों के महंतों और ग्रंथियों के साथ आप अक्सर ही सभायें किया करते थे। आप ऐसे प्रेम-भाव के साथ पेश आते थे और उनकी माँगों को इस फराखदिली व इन्साफ के साथ सुन कर पूरा किया करते थे कि महंत ख़ुशी-ख़ुशी गुरुद्वारा साहिब को प्रबंधक कमेटी के सुपुर्द करके कमेटी के आज्ञाकार बन जाते थे।''[६]

'चाबियों का मोर्चा' में भी उन्होंने गिरफ़्तारी दी। जब श्री दरबार साहिब की चाबियाँ श्री अमृतसर साहिब के डिप्टी कमिशनर ने सरदार सुंदर सिंघ रामगढ़िया से ले लीं तो इससे सम्बन्धित पंथ में आक्रोश की लहर पसर गई। इसके सम्बन्ध में नवंबर में अजनाला में हुई गिरफ़्तारियों में सरदार तेजा सिंघ को भी गिरफ़्तार किया गया। उन्हें पाँच

महीने की कैद की सजा सुनाई गई और मियांवाली तथा डेरा गाज़ीखान की जेल में भेज दिया गया। १९२२ ई. में चाबियाँ वापस देने से अन्य नेताओं सहित सरदार तेजा सिंघ भी जेल से रिहा हो गए।

अक्सर ही किसी भी विषम और उलझे हुए कार्य को सुलझाने के लिए आप जी को ज़िम्मेदारी दी जाती थी। गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के केस का निपटारा करने के लिए भी सरदार तेजा सिंघ समुंदरी की ड्यूटी लगाई गई। इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रमुख नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया गया। इस समय जेल से बाहर रह कर उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी तनदेही के साथ निभाई। प्रतिदिन जत्था तैयार कर भेजना, बाहर से आए सिंघों की रिहायश और लंगर का प्रबंध करना, सरकार की नीतियों का पता लगाना, घायलों की देखभाल करना आदि कार्य की ज़िम्मेदारी सरदार तेजा सिंघ की थी। जब श्री अमृतसर साहिब के निवासियों ने ज़ख़्मी सिंघों के लिए ज़रूरी वस्तुओं– कपड़े, बिस्तर, दवा आदि का प्रबंध किया तो उस समय सरदार तेजा सिंघ ने मोर्चे की विजय की भविष्य–वाणी की। इस समय के दौरान उनको कभी किसी ने कार्य–विहीन बैठे नहीं देखा था। उन दिनों हर पक्ष से सजग होकर चलने की ज़रूरत थी। इसके लिए सरदार तेजा सिंघ ने सूचना–प्रसारण और अंदरूनी बातों की जानकारी रखने वाले अदारे स्थापित किए थे। उन्होंने इस गंभीर स्थिति में अपने स्वास्थ्य की परवाह किए बिना बहुत ही दूरंदेशी के साथ सभी प्रबंध चलाए। आपको हर पल कभी अस्पताल, कभी लंगर, कभी गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के जत्थों के साथ देखा गया। गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के मोर्चे के दौरान आपने जेल से बाहर रह कर जो पंथ के प्रति अपना फ़र्ज़ निभाया, उसे कभी भी आँखों से ओझल नहीं किया जा सकता। इस मोर्चे की सफलता का सेहरा सरदार तेजा सिंघ समुंदरी के सिर ही सजता है। उनका स्वभाव शांतमयी और सहजता के साथ बात करने वाला था, जिस कारण कोई भी उनकी बात को नहीं काटता था। उनके बातचीत करने के आकर्षक ढंग द्वारा ही कई महंतों ने गुरुद्वारे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सुपुर्द कर दिए थे। इस प्रकार गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में सरदार तेजा सिंघ समुंदरी का योगदान शब्दों में बयान करने से बाहर की बात है। गुरुद्वारा साहिबान को आज़ाद करवाने के उद्देश्य के बारे में ज्ञानी हीरा सिंघ दर्द लिखते हैं :–

''आपके दिल में गुरुद्वारों का प्रबंध सुधार कर इनको सिक्ख धर्म का केंद्र बनाने की ज़बरदस्त तड़प थी। सच्ची बात तो यह है कि अकाली लहर में सरदार तेजा सिंघ और मास्टर तारा सिंघ, दो शख़्सियतें ऐसी थीं जिससे अकाली लहर का इतना प्रसार हुआ।''[७]

एक बार जब सरकार को यह पता चला कि अकालियों में फूट पड़ गई है तो सरदार तेजा सिंघ समुंदरी ने यह ख़बर सुनते ही श्री अमृतसर साहिब में दस हज़ार सिंघों की एक विशाल सभा आयोजित कर एकजुटता और वफ़ादारी का सबूत दिया। इसके बाद सरकार की तरफ से समझौते की नीति अपनाई गई। जब अप्रैल, १९२३ ई. में बैसाखी से दो दिन पहले हिंदू–मुस्लिम फ़साद शुरू हुए तो इस फ़साद के रुकने के बाद आपस में

शांतमयी सम्बन्ध पैदा करने के लिए हिंदू-मुसलमान नेताओं की बुलाई गई कान्फ्रेंस का प्रधान सरदार तेजा सिंघ समुंदरी को चुना गया।

सरदार तेजा सिंघ समुंदरी कभी भी किसी पद विशेष के पीछे नहीं दौड़े, बल्कि यदि उनका कहीं पर चयन हो भी जाता, तो वे अपने से वरिष्ठ लोगों का सम्मान बरकरार रखने के लिए उन्हें ही प्राथमिकता देते। जुलाई, १९२३ ई. में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के द्वितीय चुनाव के समय पंथ ने उन्हें सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनाने की तजवीज़ रखी, परन्तु वे सहमत न हुए। फिर उन्होंने उपाध्यक्ष बनना स्वीकार कर लिया।

महाराजा रिपुदमन सिंघ को गद्दी से उतारे जाने का भी उन्होंने विरोध किया। जैतो के मोर्चे में भी उन्होंने अपना कीमती योगदान दिया। सरकार द्वारा अक्तूबर, १९२३ ई. में उन्हें अन्य ३६ अकाली नेताओं के साथ गिरफ़्तार कर लिया गया। इन पर बग़ावत का मुकद्दमा चलाया गया। पहले श्री अमृतसर साहिब की जेल में और बाद में शाही किला लाहौर में कैद किया गया। वे ऐसे नेता थे जिन्होंने कारावास के दौरान किसी के साथ झगड़ा नहीं किया। जब वे शाही किला लाहौर में कैद थे तो उनके लड़के स. मान सिंघ का विवाह था। उन्होंने सरकार के आगे घुटने टेक कर छुट्टी लेने से मना कर दिया और पुत्र-विवाह में शामिल न हुए। कई तथाकथित अकाली नेता सरकार की शर्तें मान कर बाहर आ गए, परन्तु सरदार तेजा सिंघ ने उनकी शर्तों को ठोकर मार दी। इसके बाद उनको साथियों सहित सेंट्रल जेल लाहौर में तबदील कर दिया गया। इनके सहित १४ साथी ही अंदर रह गए। सरदार तेजा सिंघ समुंदरी अपने फ़ैसले पर दृढ़ थे कि वे किसी भी हालत में सरकार के फ़ैसले को नहीं मानेंगे।

१७ जुलाई, १९२६ ई. को उन्होंने अदालत में मुकद्दमे के गवाहों के साथ पूरी बातचीत की। इस समय वे पूरी तरह से स्वस्थ थे, परन्तु अचानक ही उनकी बायीं तरफ़ छाती में तकलीफ़ हुई और वे गिर पड़े। डॉक्टर के चेक करने पर पता चला कि वे अकाल प्रस्थान कर चुके हैं। इस प्रकार आप 'जन परउपकारी आए' के महावाक्य को पूरा करते हुए बिना किसी से सेवा करवाए १७ जुलाई, १९२६ ई. को पाँच तत्वों में विलीन हो गए। इस समय आपकी आयु लगभग साढ़े पैंतालीस वर्ष थी। ज्ञानी हीरा सिंघ दर्द उनके अकाल प्रस्थान से सम्बन्धित अपने विचारों को इस प्रकार बयान करते हैं :

सावण दूई नू जेहल लाहौर अंदर,
तारा तेज वाला साडा डुब गिआ।
जित्थे जित्थे ए कहिर दी खबर पहुंची,
कंडा किक्कर दा कालजे चुब गिआ।
सागर गमां दा उछलिआ तोड़ कंढे,
कोई रुढ़ चलिआ, कोई डुब्ब गिआ।
हाय ! हाय ! करके कहिंदे दरद वाले,
पंथक बेड़ा बरेते विच खुब गिआ।

उनकी अर्थी मास्टर तारा सिंघ, सरदार भाग सिंघ वकील, सरदार सरमुख सिंघ झबाल, सरदार गोपाल सिंघ कौमी तथा अन्य साथी जेल के दरवाज़े तक लाए। उनकी मृतक देह गुरुद्वारा पिपली साहिब श्री अमृतसर साहिब लगभग दो बजे पहुँची। उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए दूर-दूर से संगत पहुँची। उनकी मृतक देह

से सम्बन्धित जुलूस हॉल बाज़ार, श्री दरबार साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब, गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब, गुरुद्वारा रामसर साहिब, गुरुद्वारा शहीदगंज बाबा दीप सिंघ जी से होता हुआ छः बजे के लगभग चाटीविंड दरवाज़े के निकट शमशानघाट पहुँचा। उनके अंतिम संस्कार के समय उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति की आँखें नम थीं। उनकी धर्म-माता माई राधा उनके अकाल प्रस्थान की ख़बर मिलते ही श्री अमृतसर साहिब पहुँची, परन्तु उस समय तक अतिम संस्कार हो चुका था। आखिरी बार अपने पुत्र के दर्शन न कर सकने के कारण वे व्याकुल नजर आईं। अपने धर्मी पुत्र के देहांत के कुछ दिन बाद वे भी चल बसीं। जब महाराजा रिपुदमन सिंघ को सरदार तेजा सिंघ समुंदरी के देहांत की ख़बर (देर से) मिली, तो वे काफ़ी समय तक विरह के आँसू बहाते रहे। जब सरकार ने सितंबर १९२६ ई. में बाकी अकाली नेताओं को बिना शर्त रिहा कर दिया तो अकाली नेताओं द्वारा ग्रुप फ़ोटो खिंचवाई गई, जिसमें सरदार तेजा सिंघ के जीवन-संघर्ष को न भूलते हुए उनकी फ़ोटो कुर्सी पर रख कर ग्रुप फ़ोटो में उन्हें भी शामिल किया गया। यह है पंथ-दर्दियों की अपने मित्र प्यारों के लिए स्नेह की अनोखी मिसाल!

२ अक्तूबर, १९२६ ई. को जब सेंट्रल गुरुद्वारा बोर्ड के अध्यक्ष के तौर पर पदाधिकारियों का चयन करने हेतु सभा हुई तो उसमें सर्वप्रथम सरदार तेजा सिंघ समुंदरी के अकाल प्रस्थान पर शोक प्रस्ताव पेश किया गया।[८]

सिक्ख पंथ के लिए अपना पूरा जीवन न्यौछावर करने वाले इस महान नेता के नाम पर सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हॉल नामक इमारत श्री अमृतसर साहिब में सुस्थित है, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का मुख्यालय स्थापित है। इस इमारत में प्रवेश करते ही उनकी याद फिर से ताज़ा हो जाती है।

सरदार तेजा सिंघ समुंदरी का वैयक्तिक एवं पंथक जीवन सिक्ख जगत के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते रहेगा। हमें उनके परोपकारी जीवन से शिक्षा लेकर पंथक कार्यों के लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए।

हवाला-सूची :

१. पिआर सिंघ, तेजा सिंघ समुंदरी, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर साहिब, १९७५, पृष्ठ ९.
२. उपरोक्त, पृष्ठ २१
३. उपरोक्त, पृष्ठ १२.
४. ज्ञानी हीरा सिंघ दर्द, सरदार तेजा सिंघ जी समुंदरी दी जीवन-कथा, फुलवाड़ी, जिल्द द्वितीय, अंक १०, अगस्त १९२६, पृष्ठ ८४०.
५. उपरोक्त।
६. उपरोक्त, पृष्ठ ८४३
७. उपरोक्त।
८. रूप सिंघ, पंथ सेवक, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, मार्च २०१०, पृष्ठ ५१.

ख़बरनामा

राम रहीम को कत्ल केस में बरी करना असंतोषजनक फ़ैसला : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २८ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने डेरा सिरसा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को डेरे के प्रबंधक रणजीत सिंघ के कत्ल के मामले में पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट द्वारा बरी किये जाने को दुखदायी करार देते हुए कहा कि आचरणहीन तथा सिक्खों की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचाने वाले इस व्यक्ति को किसी प्रकार की राहत नहीं मिलनी चाहिए। एडवोकेट धामी ने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी मामले के मुख्य दोषी गुरमीत राम राहीम पर पहले ही भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली हरियाणा सरकार नियमों को नजरअन्दाज कर पूरी तरह से मेहरबान है और अब रणजीत सिंघ कत्ल केस में आया फ़ैसला भी असंतोषजनक है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि हम अदालतों का सम्मान करते हैं। उन्होंने कहा कि राम रहीम कई संगीन अपराधों के अंतर्गत सज़ा काट रहा है और सीबीआई का यह फ़र्ज़ है कि वह रणजीत सिंघ कत्ल केस की ठोस पैरवी करे, जिससे जांच-प्रणाली पर से लोगों का भरोसा न टूटे। एडवोकेट धामी ने यह भी कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खों की प्रतिनिधि संस्था होते हुए पंथ-विरोधी व्यक्ति राम रहीम के विरुद्ध रणजीत सिंघ कत्ल केस में उसके परिवार की यथासंभव मदद करने के लिए भी तैयार है।

श्री अकाल तख़्त साहिब पर मनाई गई
जून 1984 ई. के घल्लूघारा की ४0वीं वर्षगाँठ

श्री अमृतसर साहिब : ६ जून : जून, १९८४ ई. में सचखंड श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब पर भारत की कांग्रेस सरकार की तरफ से किये गए फ़ौजी हमले (घल्लूघारा) की ४०वीं वर्षगाँठ श्री अकाल तख़्त साहिब पर समागम आयोजित कर मनायी गई। श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् रागी जत्थे ने संगत को गुरबाणी-कीर्तन के साथ जोड़ा। इस अवसर पर सिक्ख कौम को संदेश देते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने जून, १९८४ ई. के घल्लूघारा के शहीद संत ज्ञानी जरनैल सिंघ ख़ालसा भिंडरांवाले, भाई अमरीक सिंघ, जनरल शुबेग सिंघ, भाई ठारा सिंघ सहित समूह शहीदों के प्रति कौमी भावना का प्रदर्शन करते हुए सिक्ख पंथ को इस घल्लूघारा के ज़ख्मों को शक्ति बना कर आगे चलने का निमंत्रण दिया। उन्होंने कहा कि बंदी सिंघों को रिहा न करना और नवंबर, १९८४ ई. की सिक्ख नसलकुशी के दोषियों को ४० वर्ष बाद भी सज़ा न देना भारतीय हुकूमत का सिक्खों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार है, इसलिए

पंथ और पंजाब के राजनैतिक, भौगोलिक एवं और आर्थिक अधिकारों के लिए दिल्ली की तरफ बार-बार हाथ फैलाने की बजाय आज खालसयी हलेमी राज के संकल्प को समर्पित सिक्ख राजनीति को प्रफुल्लित करने की आवश्यकता है।

जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने सिक्ख इतिहास का हवाला देते हुए कहा कि अंग्रेज़ों के साथ देश की आज़ादी की लड़ाई में सिक्खों ने अग्रणी भूमिका निभाई है, परन्तु अपने ही देश के नेताओं द्वारा किये गए वायदे आज़ादी मिलने पर भुला दिए गए। यहाँ तक कि सिक्खों को जरायमपेशा कह कर सरकारी अधिकारियों को इन पर शकी निगाह रखने के फ़रमान जारी कर दिए गए।

जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने कहा कि कड़े संघर्ष के बाद सिक्खों को पंजाबी सूबा तो मिला, परन्तु पंजाब को दरियाई पानी, राजधानी चंडीगढ़ तथा बहुत-से पंजाबी बोलते इलाकों से वंचित रखा गया। पंजाब के इन मसलों और प्रांतीय स्वतंत्रता वाले श्री अनंदपुर साहिब के प्रस्ताव को लेकर सिक्खों को धर्म-युद्ध मोर्चा लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिसे जब्र की नीति द्वारा कुचलने और एमरजेंसी के समय अकाली दल द्वारा किये गए विरोध का बदला लेने के लिए अहंकारी और अत्याचारी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की तरफ से १ जून, १९८४ ई. को सचखंड श्री हरिमंदर साहिब परिसर में फ़ौज भेज कर श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी गुरुपर्व मनाने आई संगत पर गोलियाँ चला कर सिंघ-सिंघनियों, बच्चों और बुज़ुर्गों को बेरहमी के साथ शहीद कर दिया गया। उन्होंने कहा कि जून, १९८४ ई. का यह हमला सिक्ख कौम के लिए तीसरा घल्लूघारा है, जिसका दर्द और ज़ख़्म सिक्ख अवचेतन में से कभी भी आलोप नहीं हो सकेंगे।

ज्ञानी रघबीर सिंघ ने जून, १९८४ ई. के घल्लूघारा के समूह शहीदों और बैरिक छोड़ने वाले धर्मी फौजियों के त्याग और कुर्बानी को भी याद किया। उन्होंने कहा कि धर्मी फौजियों की बग़ावत के फलस्वरूप ही इंदिरा गांधी की 'ऑपरेशन वुडरोज़' के अंतर्गत सिक्ख नौजवानों की नसलकुशी के लिए बनाई गई गुप्त योजना कामयाब न हो सकी।

उन्होंने सिक्ख कौम के मौजूदा संकटों की निशानदेही करते हुए श्री गुरु नानक देव जी के सर्वकल्याणकारी फलसफे पर आधारित कौमी एजेंडा तय करने की ज़रूरत पर बल दिया। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने कहा कि सिक्खों की जन्म-भूमि और कर्म-भूमि पंजाब में से आलोप हो रहे सिक्ख जीवन-मूल्यों, वातावरण, स्वास्थ्य, मातृ-भाषा और शिक्षा के गंभीर संकट के साथ-साथ श्रम, सभ्याचार और धर्म के सच्चे जीवन-मूल्यों से विहीन राजनीति को स्वस्थ दिशा प्रदान करने के लिए सामूहिक यत्न किये जाएँ। उन्होंने गौरवमयी सिक्ख इतिहास की दिशा में विशुद्ध सिक्ख किरदार के धारक बनने की अपील करते हुए कहा कि सिक्ख कौम की आने वाली पीढ़ियों को नशे के सेवन से बचाने के लिए गंभीर यत्न किये जाएँ।

इस दौरान शहीदों के पारिवारिक सदस्यों-- भाई ईशर सिंघ, बीबी सतवंत कौर, भाई मनजीत सिंघ, सरदार बेअंत सिंघ, सरदार भुपिंदर सिंघ पहलवान इत्यादि को श्री अकाल तख़्त साहिब की तरफ से सिरोपायो देकर सम्मानित किया गया।

समागम में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी सुलतान सिंघ, सिंघ साहिब ज्ञानी अमरजीत सिंघ, निहंग संप्रदाय प्रमुख बाबा निहाल सिंघ हरियां वेलां, बाबा बलबीर सिंघ ९६वें करोड़ी, बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता, सदस्य भाई अमरजीत सिंघ (चावला), भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) स. गुरमीत सिंघ बूह, स. हरपाल सिंघ जल्ला, स. अमरीक सिंघ विछोआ, भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, स. अमरीक सिंघ शाहपुर, बाबा चरनजीत सिंघ जस्सोवाल, हेंड ग्रंथी ज्ञानी मलकीत सिंघ, पूर्व जत्थेदार ज्ञानी गुरबचन सिंघ, भाई जसबीर सिंघ रोडे, ज्ञानी केवल सिंघ, स. सिमरनजीत सिंघ (मान), बाबा बलजीत सिंघ दादूवाल, स. जसबीर सिंघ घुंमण, स. मनजीत सिंघ जीके, स. अमरबीर सिंघ ढोट, स. कंवरचढ़त सिंघ, स. सरबजीत सिंघ खालसा, भाई सुखविंदर सिंघ अगवान, माता बलविंदर कौर, स. ईमान सिंघ (मान), स. कंवरपाल सिंघ, स. परमजीत सिंघ मंड, स. बलवंत सिंघ गोपाला, स. तलविंदर सिंघ बुट्टर, सचिव स. प्रताप सिंघ, स. सुखमिंदर सिंघ, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. तेजिंदर सिंघ पड्डा, स. प्रीतपाल सिंघ, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा आदि उपस्थित थे।

सरकारें देश में सिक्खों के ख़िलाफ़ बढ़ रहे नफ़रती महौल को रोकने के लिए अपनी ज़िम्मेदारी निभाएं : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : ११ जून : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने हरियाणा के कैथल में एक सिक्ख की नफ़रती भावना के अधीन मारपीट किए जाने का सख़्त नोटिस लेते हुए कहा है कि पुलिस प्रशासन दोषियों को तुरंत गिरफ़्तार कर उनके ख़िलाफ़ कानूनी कार्यवाही करे। एडवोकेट धामी ने कहा कि इस घटना से समूचे सिक्ख जगत की भावनाओं को ठेस पहुंची है, लिहाज़ा हरियाणा सरकार इसे गंभीरता के साथ ले और राज्य में निवास कर रहे सिक्खों की सुरक्षा व्यवस्था को सुनिश्चित बनाए।

उन्होंने कहा कि पिछले कुछ समय के दौरान देखने में आ रहा है कि सिक्खों के विरुद्ध भारत में लगातार नफ़रती माहौल सृजित किया जा रहा है और विभिन्न राज्यों में बिना किसी कारण सिक्खों को निशाने पर लिया जा रहा है। सरकारों की यह ज़िम्मेदारी है कि देश में हर वर्ग, हर धर्म और हर फिरके के लोगों की धार्मिक आज़ादी व अधिकारों की रक्षा करें। जो भी लोग देश के संविधान के विरुद्ध जाकर नफ़रती और सांप्रदायिक महौल पैदा कर रहे हैं उनके विरुद्ध सख़्त कार्यवाही की जाए।

एडवोकेट धामी ने कहा कि कैथल निवासी सरदार सुखविंदर सिंघ को दो अनजान व्यक्तियों द्वारा शहर के निकट रोक कर नफ़रती टिप्पणियां करना और मारपीट करना देश में बढ़ रही नफ़रती हिंसा का परिणाम है, जिस सम्बंध में हरियाणा सरकार के साथ-साथ केंद्र सरकार की भी

ज़िम्मेदारी बनती है कि इस घटनाक्रम को संजीदगी के साथ ले, क्योंकि ऐसी हरकतें देश-हित में नहीं हैं।

इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव सरदार प्रताप सिंघ ने बताया कि कैथल में सिक्ख की मारपीट के मामले में एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के निर्देशानुसार कैथल के पुलिस कप्तान को ई-मेल पत्र भेज कर दोषियों के ख़िलाफ़ आवश्यक कार्यवाही किए जाने के लिए कहा गया है।

यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति द्वारा सिक्ख इतिहास को बिगाड़ने पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने किया एतराज़ प्रकट

श्री अमृतसर साहिब : ११ जून : कुरुक्षेत्र स्थित श्रीकृष्ण आयुश यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति द्वारा पाँचवें पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के शहीदी दिवस के अवसर पर यूनिवर्सिटी में आयोजित समारोह के दौरान गुरु-इतिहास को बिगाड़ कर पेश करने पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने एतराज़ प्रकट किया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से इस मामले में यूनिवर्सिटी के कुलपति और हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेअ को एक ई-मेल पत्र भेज कर यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति प्रोफ़ेसर वैद्य करतार सिंह धीमान से स्पष्टीकरण लेने और उनसे सिक्ख जगत से क्षमा-याचना करने के लिए कहा है।

इस सम्बंध में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सिक्खों का इतिहास विलक्षण और मौलिक है, जिसमें साज़िश के अंतर्गत मिलावट करने की चालें चली जा रही हैं। इसी घटनाक्रम के अंतर्गत ही श्रीकृष्ण आयुश यूनिवर्सिटी कुरुक्षेत्र के उप-कुलपति ने एतराज़योग्य हरकत की है, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि उप-कुलपति द्वारा श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के इतिहास को जानबूझ कर बिगाड़ते हुए हिंदू धर्म की रक्षा के लिए दी गई कुर्बानी कहना सरासर गलत है। यह सिक्ख इतिहास के सिद्धांतों को चोट पहुंचाने वाली कार्यवाही है। यदि एक ज़िम्मेदार पद पर बैठा व्यक्ति ऐसी हरकत करे तो यह और भी गंभीर तथा साजिशपूर्ण बात लगती है। एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि इस यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति के ख़िलाफ़ कड़ी कार्यवाही की जानी चाहिए, क्योंकि एक सरकारी पद पर आसीन ज़िम्मेदार अधिकारी का कर्त्तव्य बनता है कि वह सभी धर्मों की भावनाओं का ख़्याल रखे। उन्होंने कहा कि गुरु साहिबान के गुरुपर्व मनाना अच्छी बात है, परंतु ये सिक्ख धर्म की रिवायतों और इतिहास को बिगाड़ने के लिए न मनाए जाएँ।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा यह गंभीर जांच का विषय है जिस पर यूनिवर्सिटी के कुलपति और हरियाणा के राज्यपाल को सख़्त नोटिस लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा हरियाणा के राज्यपाल को कार्यवाही के लिए ई- मेल पत्र भेजा गया है और यदि समय पर कार्यवाही नहीं की गई तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कानूनी तौर पर आगे बढ़ेगी।

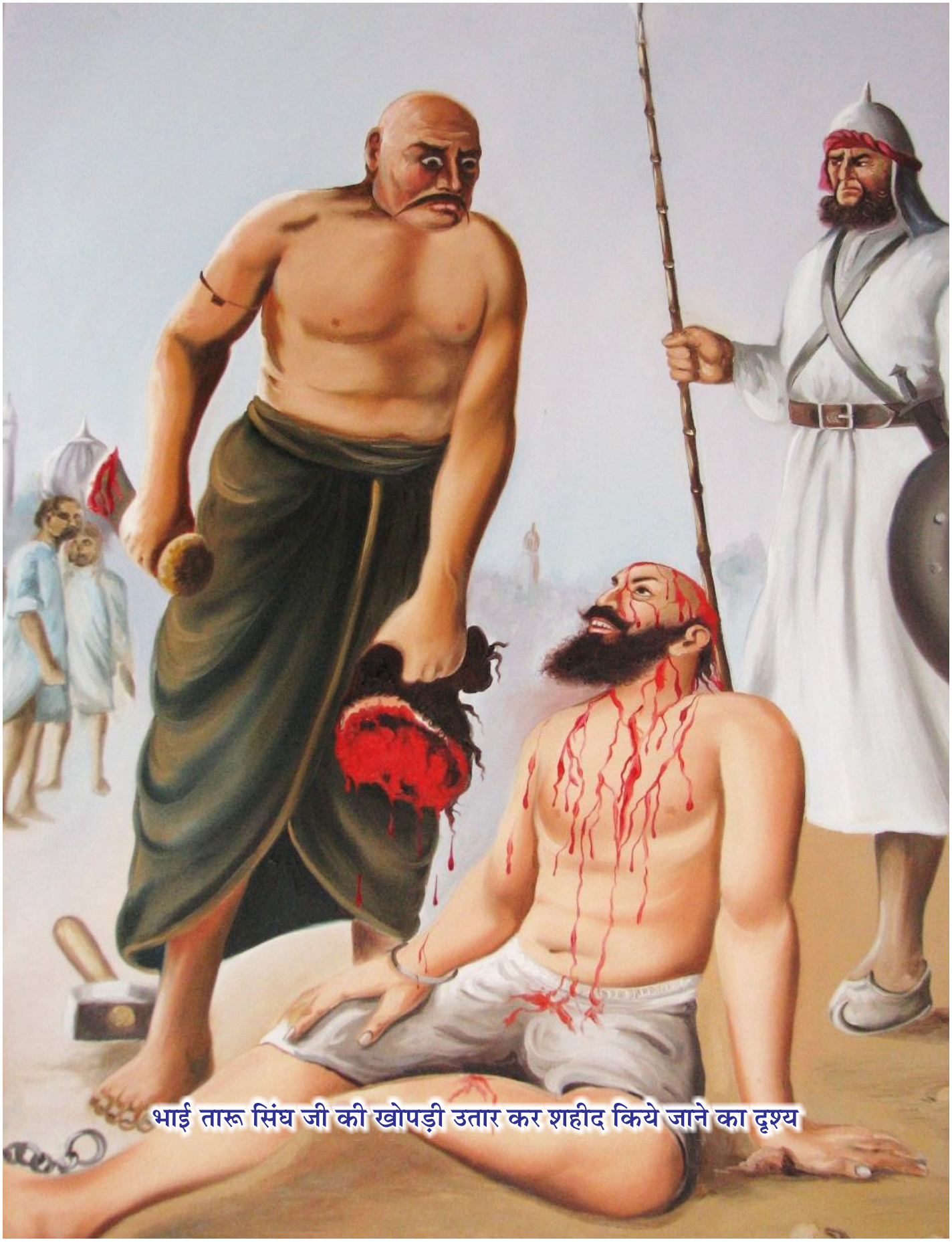

भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतार कर शहीद किये जाने का दृश्य

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

July 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

माता भाग कौर जी

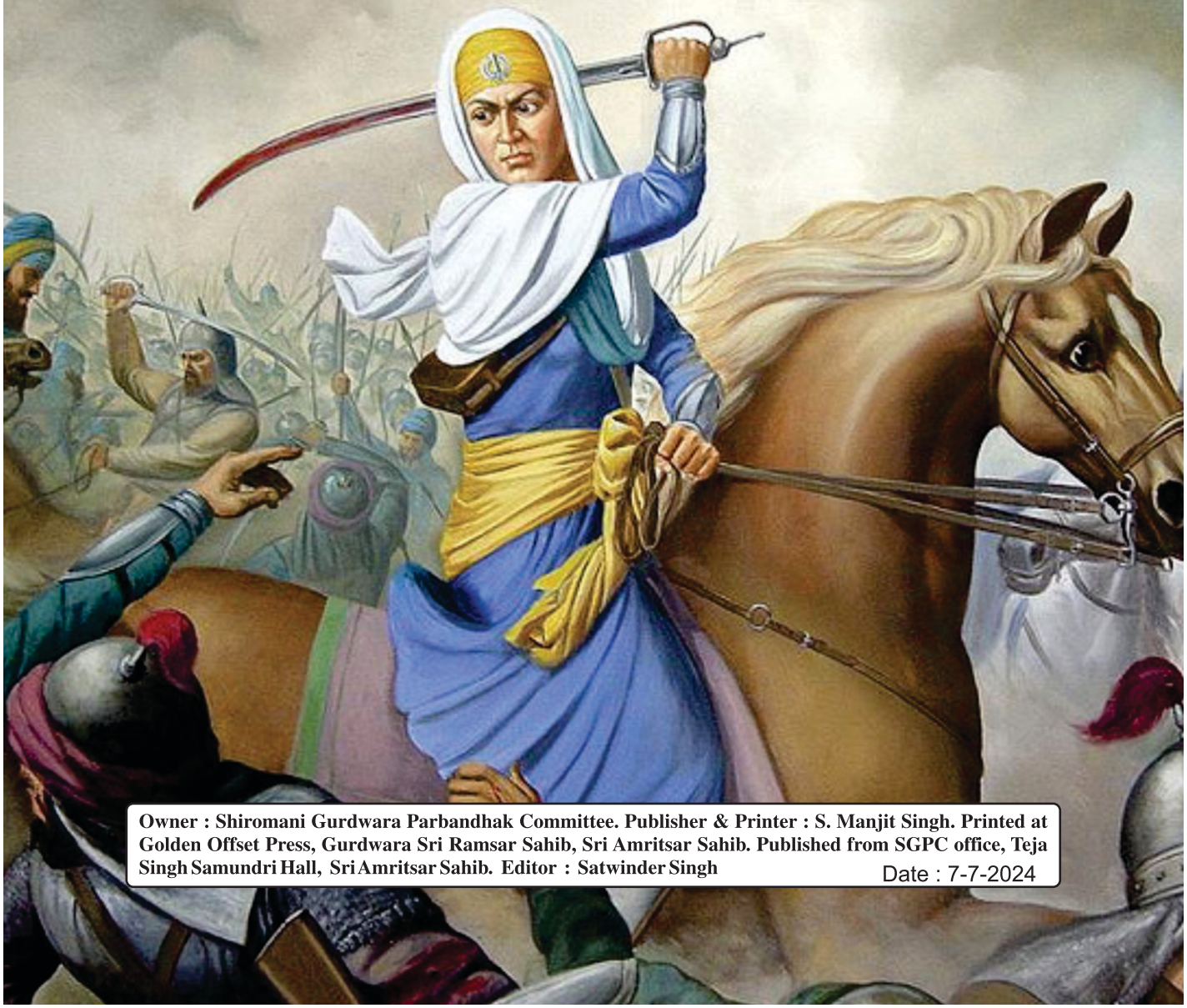

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-7-2024